ŚRI DHŪMAVATYĀSAPARYĀ´ṆAVAH

Tantra
ST

श्रीधूमावत्यासपर्याऽर्णवः

卐 卐

संकलनकर्ता-श्रीराधारमण दूर्वार 'शास्त्री'

श्रीधूमावत्यासपर्याऽर्णवः

संकलनकर्ता

श्रीराधारमण दूर्वार 'शास्त्री'

श्रीपीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्

दतिया (म० प्र०)

प्रकाशक :
श्रीपीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्,
दतिया (म० प्र०)

मूल्य : २०–०० रु.

प्रथम संस्करण : संवत् २०४५ वि.
जनवरी १९८८ ई.
प्रतियाँ १०००

मुद्रक :
स्वाती एन्टरप्राईज
२०, ग्रेटनाग रोड,
नागपुर – ९
पिन ४४०००९

आरम्भिका

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डाभक प्रपञ्च की अधिष्ठान भूता भगवती ही सम्पूर्ण विश्व को सत्ता, स्फूर्ति तथा सरसता प्रदान करती हैं। विश्वप्रपञ्च उन्हीं में उत्पन्न होता है, स्थित होता है अन्त में उन्हीं में लीन हो जाता है। दक्षपुत्री सती को ही महाविद्या नाम से अभिहित किया गया है। अतः दश महाविद्याओं के प्रादुर्भाव का सम्बन्ध सती से जोडा गया है। महा भागवत में कथा आई है कि दक्ष प्रजापति ने यज्ञ का आयोजन किया उसमें शिव को आमन्त्रित नहीं किया, सती जी ने तब भी यज्ञ में जाने की अनुमति मांगी, दक्ष प्रजापति के शत्रुतापूर्णव्यवहार को ध्यान में रखते हुये शिव ने सती को यज्ञ में जाने से रोका। सती जाने की हठ करने लगीं उन्होंने कहा मैं प्रजापति के यज्ञ में अवश्य जाऊंगी, या तो यज्ञ का भाग प्राप्त करूंगी अन्यथा यज्ञ को नष्ट कर दूंगी। इतना कहते ही सती जी के नेत्र क्रोध से लाल हो गये वे शिव को क्रोध से देखने लगीं, उन्होंने जोर से अट्टहास किया सती जी का शरीर क्रोधाग्नि से काला पड़ गया, अट्टहास सुनकर शिव अत्यंत भयभीत होकर भाग पड़े। सती जी ने भागते हुये शिव को रोकने के लिये (दश महाविद्या रूपा) दशों दिशाओं में दश मूर्तियां खडी कर शिव को रोक लिया। ये ही दश मूर्तियां काली, तारा आदि दश महाविद्यायें कहलाईं। शिवपुराण की उमा संहिता के पचासवें अध्याय दुर्गमासुरवध के प्रसंग में दश महाविद्याओं के प्रादुर्भाव की कथा आई है। दुर्गम द्वारा वेद क्रियाओं का लोप होने पर देवता शक्ति हीन होगये, उन्होंने देवी की प्रार्थना की, देवी ने प्रगट होकर देवताओं से पूछा– तुम्हारा और कौन सा कार्य करूं तब देवताओं ने कहा कि दुर्गम द्वारा अपहृत वेदों को लाकर दीजिये देवी ने तथास्तु कहकर देवताओं से कहा कि शीघ्र ही मैं वेद लाकर तुम्हें दूंगी। कोलाहल सुनकर महादैत्य दुर्गम ने चारों ओर से देवी को घेर कर युद्ध करने लगा इसी समय देवी के शरीर से दश महाविद्यायें युद्ध करने के लिये प्रकट हुईं।

सप्तमी महाविद्या धूमावती के रूप में महाशक्ति के प्रादुर्भूत होने की प्राण तोषिणी तन्त्र में एक कथा है। एक समय कैलाश पर्वत पर महादेव के साथ पार्वती जी विराजमान थीं उन्होंने शंकर जी से कहा– बड़ी भूंख

लगी है कुछ खाने को दीजिये। कई बार मांगने पर भी जब कु नहीं मिला तो पार्वती जी ने महादेव को पकड कर निगल लिया। महादेव तो अजन्मा हैं वे उनके शरीर से धुआं बन कर निकले उन्होंने पार्वती जी से कहा कि आपकी सुन्दर मूर्ति धुंये से ढक जाने के कारण धूमावती के नाम से प्रसिद्ध होगी। इसी प्रकार कार्त्तिक महात्म्य में भी इनके प्राकट्य की कथा है। इसमें कार्त्तिक कृष्ण चतुर्दशी को अलक्ष्मी के रूप में इनका प्रादुर्भाव बताया गया है ये लक्ष्मी की बडी वहिन हैं। नारद पाञ्चरात्र का विवरण इस प्रकार है- उन्होंने अपने शरीर से उग्र चण्डिका प्रकट की थी जो सैकडों गीदडियों के समान आवाज करने वाली थी उसीने शिव को दूत बनाकर भेजा था। शिव को निगल जाने का तात्पर्य है उनके स्वामित्व का निषेध। असुरों के कच्चे मांस से उनकी अंगभूता शिवायें तृप्त हुईं यहीं उनकी भूंख का रहस्य है। तन्त्रान्तर के मत से सप्तशती के छठवें अध्याय की अधिष्ठात्री धूमावती मानी गईं हैं।

संसार में दुःख के कारण चार देवता हैं। ज्वर, उन्माद और दाह रुद्र के कोप से, मूर्छा, विकलांगता यम के कोप से, शूल, गठिया तथा लकवा वरुण के कोपसे, शोक, कलह, क्षुधा, तृषा निर्ऋति के कोप से होते हैं। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है-

घोरा पाटमा वै निर्ऋतिः (७-२-१-१)

धूमावती की पीठ शक्तियों में निर्ऋति, क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, दुर्गति, रुषा, अक्षमा आदि शक्तियों का उल्लेख यही प्रदर्शित करता है कि विपत्ति नाश, शत्रुनाश, युद्ध, जय, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण आदि उग्रकर्मों में इस महा शक्ति का प्रयोग सद्यः सिद्धिप्रद है।

विश्वोच्चाटन कामो धूमावतीमुपासीत्। १८

इस महाशक्ति के द्वारा सारे विश्व का उच्चाटन किया जा सकता है प्रसंगवश अत्युक्ति नहीं है कि सन् १९६२ में जब चीन ने भारत पर प्रबल आक्रमण किया उस समय परमपूज्य परमाराध्य श्री गुरुदेव ने पीताम्बरा पीठ पर राष्ट्र रक्षार्थ एक अनुष्ठान कराया था जिसमें भगवती धूमावती का प्रत्यक्ष सफल प्रयोग भी किया था। स्तोत्र की फलश्रुति में-

महापदि महाघोरे महारोगे महारणे।
शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा॥

घोर विपत्ति में, महारोग निवारण में, शत्रुकृत उच्चाटन-मारण-मोहन

आदि अभिचारों को नष्ट कर भगवती अपने साधकों का हर प्रकार से कल्याण करती हैं कवच में भी इसका उल्लेख है–

दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रन्नैव संस्पृशेत् ।।

धूमावती स्थितप्रज्ञा की प्रतीक हैं। इनका वाहन वासनामय मन का प्रतीक है जो हमेशा अतृप्त रहता है। तमोमयी बुद्धि या अविवेक ही धूम्रवर्ण का शरीर है। जीव की पशु अवस्था ही भूख, प्यास, दारिद्र, ईर्षा, आदि इनकी क्रियायें हैं विलम्बित पयोधर वात्सल्य के अभाव का प्रतीक है। रुक्षा विरक्ति को दर्शाती है।

तन्त्र ग्रन्थों में उग्रतारा का अन्य रूप ही धूमावती है जो धूम्रवर्ण का होने से धूमावती कहलाया–

धूमव्याप्तशरीरात्तु ततो धूमावती स्मृता ।
यथोग्रतारिणीमूर्ति यथा काली पुरा सती ।
छिन्नमस्ता यथा मूर्ति तथा त्वं परमेश्वरी ।।

दुर्गा सप्तशती में रात्रिसूक्त में इसी महाशक्ति का स्तवन ब्रह्मा जी ने किया है। देवीशूक्त में "या देवी सर्वभूतेषुक्षुधारूपेण संस्थिता, तृष्णा रूपेण" आदि में प्रार्थना की गई है।

साधन क्रम–

योग्य साधक से मंत्र दीक्षा प्राप्तकर सावधान होकर धूम्र क्रम के अनुसार इनका साधन करना चाहिये।

महाधूम्रक्रमेणैव फलदा धूम्रनायिका । (आगम रहस्य)

साधना स्थल, निर्जन, खंडहर, श्मशान होना चाहिये, काले वस्त्र धारण करना, काला ही तिलक लगाना साधना में सहायक होता है। साधना दक्षिण एवं वाममार्ग दोनों से की जा सकती है–

कमला भुवना बगला तथा धूमावती प्रिये ।
दक्षिणाचार योगेन सिध्यन्त्येव न संशयः ।
वामाचारेण च तथा सिद्धिदा भवति ध्रुवम् ।।

आठ लाख जप का पुरश्चरण करने से साधकों को सिद्धि लाभ होता है। साधक अष्ट पाशों से मुक्त होकर मुक्ति प्राप्त करता है।

प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में तंजोर पुस्तकालय से प्राप्त हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, एवं वोल्डेन लायब्रेरी आक्सफोर्ड से प्राप्त हस्तलिखित धूमावती पंचांग की माइक्रोफिल्म, शारदा तिलक, मन्त्र महोदधि, मन्त्र महार्णव, प्रपंच सार, सार संग्रह तन्त्र, प्राण तोषिणी, पुरश्चर्यार्णव, फेत्कारिणी तन्त्र, शक्ति संगम तन्त्र आदि से प्रामाणिक विषय संग्रहकर जिज्ञासु साधकों के उपकारार्थ प्रकाशित किया गया है।

विशेष-भगवती धूमावती की साधना अत्यंत उग्र है अतः साधक अनुभवी योग्य साधक के निर्देशन में ही साधना करें। ध्यान रखें अभिचारिक प्रयोग करने में जरा भी असावधानी भयंकर विपत्तियों से आक्रान्त कर देती है।

राधारमण दूर्वार 'शास्त्री'
धर्मालङ्कार
पीताम्बरा पीठ, दतिया
(म. प्र.)

मकर संक्रान्ति
संवत् २०४५
जनवरी १९८९ ई.

प्रकाशकीय

देश में भगवती धूमावती के विषय में बहुत कम साहित्य उपलब्ध है। इनकी अर्चनापद्धति भी कहीं उपलब्ध नहीं थी। बड़ी गवेषणा एवं श्रम के पश्चात् ही पीठ के ही श्रीराधारमण दूर्वार 'शास्त्री' धूमावती सम्बन्धी कुछ दुर्लभ सामग्री सङ्कलन कर सके हैं। इस प्रयास के लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। इस दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन कर परिषद् सन्तोष का अनुभव करती है। आशा है "श्रीधूमावत्यासपर्य्याऽर्णवः" नामक यह कृति भगवती के साधकों को लाभप्रद सिद्ध होगी।

विनीत :
पं० सूर्यदेव शर्मा
मन्त्री
श्रीपीताम्बरापीठ, दतिया
(म० प्र०)

शरदपूर्णिमा
दि० २५-१०-१९८८ ई.

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१.	धूमावती सूत्रम्	१ – २
२.	धूमावती क्रमः	२ – ८
३.	यन्त्रोद्धार	८ – ८
४.	मन्त्र प्रकरणम्	९ – २४
५.	स्तोत्र प्रकरणम्	२५ – ४५
६.	धूमावती पूजापद्धतिः	४६ – ७१
७.	धूमावती गायत्री मन्त्र	७१ – ७१
८.	धूमावती कवचम् तथा स्तवः	७२ – ७२
९.	धूमावत्याधूमक्रमः एवं प्रशस्तपुष्पम्	७३ – ७४
१०.	धूमावती विद्या	७४ – ७५
११.	अघोर मन्त्र	७५ – ७६
१२.	मोक्षप्रदा श्रीधूमावती मन्त्र	७६ – ८०
१३.	मन्त्रदोष निवृत्ति के उपाय	८० – ८१
१४.	श्रीधूमावती प्रादुर्भाव	८१ – ८२

अनन्त श्री स्वामी जी महाराज, दतिया (म. प्र.)

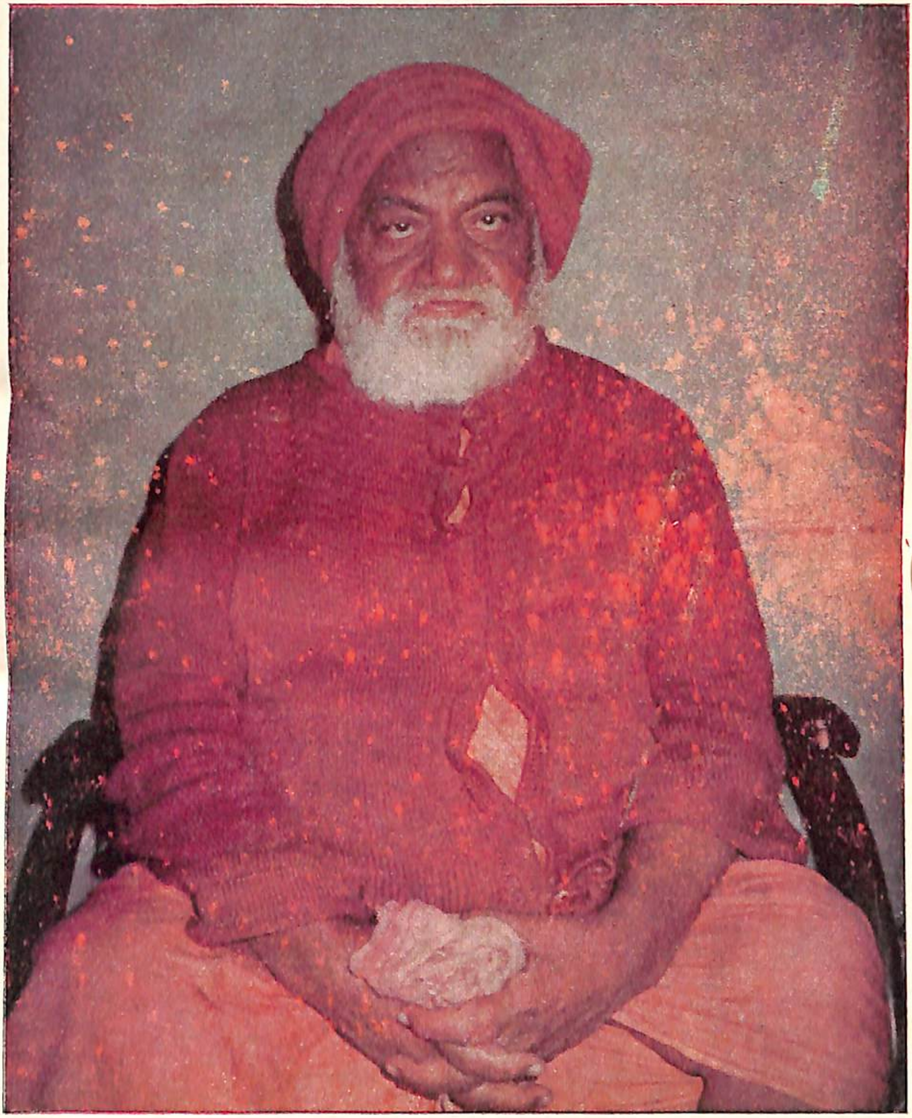

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्, द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नियं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतम्, भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि ।।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

धूमावती सूत्रम्

१ सप्तमी धूमावती दशसु विद्यासु ।

२ यथानात्मनोऽन्यध जानात् परमः ।

३ स योगनिद्रा प्रलयकालिकी धूमावती ।

४ सर्वकालानुवन्धिनीत्येके ।

५ मुक्तानां च नित्यानन्द निद्रा ।

६ संसारिणा तु निद्रा मूर्छा विस्मृतिश्च ।

७ अविद्या च यया संसारिणोनात्मानं जायते ।

८ ययैकं वहुधा पश्यन्ति सा माया ।

९ यया सन्तं न पश्यन्ति सा त्वं विद्या ।

१० देव्या निद्रा भ्रान्ति स्वरूपत्व पौराणिके देवीसूक्तं उक्तम् ।

११ इयमेव रात्रिदेवीं वेदेऽभिधीयते ।

१२ ह्वयामि रात्रिं जगतो निवेशनीमिति मन्त्रवर्णोऽत्र भवति ।

१३ इयमेव देव्याद्यं तम उच्यते ।

१४ तम आसीत्तमस गूह्लमग्र इति मन्त्रवर्गोऽत्र भवति ।

१५ तमो रूपत्वादियं धूमावती ।

१६ आद्यत्वाज्ज्येष्ठा ।

१७ आधिदेवतं वरुणानी ।

१८ विश्वोच्चाटन कामो धूमावतीमुपासीत् ।

१९ द्विरन्त धूमसहितेन शिरोन्तेन सम्बोधनेन ।

२० शुद्धमुपासनं व्यतिरेकेणैव भवति ।

२१ मान्वयेन ।

२२ सर्व संकल्प त्यागेनेत्युक्तं भवति ।

२३ तदेव महामौनम् ।

२४ संकल्पेन पूर्णे किमपिनान्तरं कुर्यात् ।
२५ अन्तरकारिणो भयं श्रयन्ते ।
२६ इयं भूमविद्योद्युपनिषदि ।
२७ अत्र हि ज्ञेयान्तर निषेधः ।
२८ अत्रैव विद्याविद्ययो समुच्चयः ।
२९ केवला त्वविद्या निषिद्धा निद्रदि ।
३० तदन्धन्तमः ।
३१ केवलाविद्या तु निषिद्धा विषयज्ञानात्मिका ।
३२ तदभूयोऽन्धन्तमः ।
३३ समुच्चयेन विद्याविद्ये उपास्ये ।
३४ विद्या च पूर्णा स्वतः सिद्धा ।
३५ अविद्या च विषयाणाम् ।
३६ विषयाऽविद्यया मृत्युं तीर्त्वा ।
३७ पूर्णविद्यायाऽमृतमश्नुते ।
३८ विषयाऽविद्ययैव पूर्णविद्या भावेत् ।
३९ एवं विद्यापि विषयाणाम् चेन्मुक्तिदा भवति ।

॥ इति धूमावती सूत्रम् ॥

धूमावती क्रमः

श्री देव्युवाच–

देवेश श्रोतुमिच्छामि धूमावत्या क्रमं शिव ।

श्री शिव उवाच–

धूमावत्याः क्रमो देवि कथ्यते शृणु पार्वति ॥१॥
भ्रूमध्ये कज्जलं देवि भस्म विन्दुं तदन्तरे ।
मृ त्रिपुण्ड्रं ललाटे स्याच्छवभस्म तदन्तरे ॥२॥

कृष्णवस्त्राम्बरधरः कृष्णगन्धविभूषितः ।
धूमावस्थाम्बरधरो धत्तूरमाल्यविभूषितः ॥३॥
गुलपेन संयुक्तः स्मशानासन संगतः ।
धूम्रवर्ण जगत्सर्वं मन्त्रं धूम्रमयं भजेत् ॥४॥
काकपिच्छं आसनं स्यात् दन्ताः कृष्णाः प्रकारयेत् ।
ब्रह्मचारी मिताहारो निर्विकल्पो जितेन्द्रियः ॥५॥
सत्यवादी मिताहारो भूशायी कुश विष्टरे ।
स्नानं त्रिषवणं कुर्यादुच्चाटनपरायणः ॥६॥
स्वचित्तं काकवत्कृत्वा जगत् उच्चाटयेत् ध्रुवम् ।
इत्याचार परोमर्त्यो धूमक्रम गतो भवेत् ॥
काकक्रमस्तु गदितः किमन्यं श्रोतुमिच्छसि ॥७॥
(पुरश्चर्यार्णवः नवमस्तरङ्गः)

धूमावत्या अङ्गदेवताः–

धूमावत्यङ्गमन्त्राश्च वीरेशो वटुकः शिवे ।
प्रत्यङ्गिरा च शरभस्तथा पाशुपतो मनुः ॥
संहारास्त्रं च ककुदी तथा कर्कटिका शिवे ।
मारिणी त्वरिता विद्या कुल्लुका पञ्चकं शिवे ॥

प्रत्यङ्गिरा

अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य भैरव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः प्रत्यङ्गिरा देवता अभीष्ट प्राप्तये जपे विनियोगः ।

न्यासः–

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः । हृदयाय नमः ।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । शिरसे स्वाहा ।
श्रीं मध्यमाभ्यां नमः । शिखायै वषट् ।
प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः । कवचाय हुँ ।

मां रक्षरक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः । नेत्रत्रयाय वौषट् ।
मम शत्रून् भंजय भंजय, करतलकर- अस्त्राय फट् ।
पृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यानम्–

टङ्कं कपालं डमरुं त्रिनेत्रं संविभ्रती चन्द्रकलावतंसः ।
पिङ्गोर्ध्वकेशोऽसित भीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली ॥

मन्त्रः–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय-भञ्जय फें हुं फट् स्वाहा ।

शरभ मन्त्रः

ॐ अस्य श्री शरभ मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्रऋषिः जगती छन्दः श्री शरभेश्वरो देवता ॐ वीजं स्वाहा शक्तिः फट् कीलकम् स्वाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः–

कालाग्नि ऋषये नमः शिरसि ।
जगती छन्दसे नमः मुखे ।
शरभेश्वर देवतायै नमः हृदि ।
ॐ वीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।
हुं फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

	१– करन्यासः	२– हृदयादिन्यासः
ॐ खें खां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।	हृदयाय नमः ।
ॐ खं फट्	तर्जनीभ्यां स्वाहा ।	शिरसे स्वाहा ।

ॐ प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् मध्यमाभ्यां वषट् । शिखायै वषट् ।
ॐ सर्वशत्रु संहारणाय अनामिकाभ्यां हुं । कवचाय हुं ।
ॐ शरभ शालुकाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्–

चन्द्रार्कौ वह्निदृष्टिः कुलिशवरनखश्चंचलोत्युग्र जिह्वा ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाडवाग्निः ।।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्युः शरभवरखगश्चण्डवातादि वेगः ।
संहर्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः ।।

मन्त्रः–

ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् सर्वशत्रु-संहारणाय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ।।

पाशुपतास्त्र

अस्य श्री पाशुपतास्त्र मंत्रस्य वामदेव ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्री पशुपति देवता मम सर्वाभीष्ट प्राप्तये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः–

शिरसि वामदेव ऋषये नमः ।
मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः ।
हृदये श्रीपशुपतये नमः ।
सर्वाङ्गे मम सर्वाभीष्ट विनियोगाय नमः ।

हृदयादिन्यासः–

हुं फट् हृदयाय नमः ।
श्लीं पशुहुं फट् शिरसे स्वाहा ।

पं हुं फट्　　　शिखायै वषट् ।
शुं हुं फट्　　　कवचाय हुं ।
हुं हुं फट्　　　नेत्रत्रयाय वौषट् ।
हुं फट्　　　अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्–

पञ्चवक्त्रं महावाहुं दशवाहुं त्रिलोचनम् ।
भीषणं भास्करं रुद्रं पिङ्गभ्रूश्मश्रुमूर्धजम् ॥
खङ्ग खेटक नाराच धनुश्शर कमण्डलून् ।
शक्ति शूलं च परशुं ब्रह्मदण्डं कराग्रकैः ॥
विभ्राणं स्फटिकाद्यावं नागाभरणभूषितम् ।
सर्वस्त्रेशं पशुपतिं सर्वरक्षाकरं स्मरेत् ॥

मन्त्रः–

ॐ श्लीं पशु हुं फट् ।

त्वरिता

ॐ अस्य श्री त्वरिता मन्त्रस्य अर्जुन ऋषिः विराट् छन्दः त्वरिता देवता हुं वीज ह्रीं शक्तिः त्वरिताप्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

खे च हृदयाय नमः ।
च च्छे शिरसे स्वाहा ।
च्छे क्षः शिखायै वषट् ।
क्षः स्त्रीं कवचाय हुम् ।
स्त्रीं हुं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
हुं क्षें अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्–

श्यामतनुमरुणपङ्कजचरणतलां　वृषलनागमञ्जीराम् ।
स्वर्णांशुकपरीधानां　वैश्याहिद्वन्द्वमेखलाकलिताम् ॥

तनुमध्यलतां पृथुलस्तनयुगलाम् करविराजदभयवराम् ।
शिखिपिञ्च्छानालवलयां गुञ्जाफलगुणितभूषणारुणिताम् ।।
नृपकंणिकेयूरान्तां गलविलसद्विविधमेणियुताभरणाम् ।
द्विजनागयुगलकुण्डल मण्डित गण्डद्वयी मुकुर शोभाम् ।।
शोणतराधरपल्लवविद्रुममणिभासुरां प्रसन्नां च ।
पूर्णशशिविम्ववदनां अरुणायतलोचनत्रयी नलिनाम् ।।
कुञ्चितकुन्तल विलसन्मुकुटा घटिताहिवैरिपिंच्छयुताम् ।
कैराती वनकुसुमोज्वलां मयूरातपत्रकेतनिकाम् ।
सुरुचिरसिंहासनगां विभ्रमसमुदायमन्दिरां तरुणीम् ।।

मन्त्रः–

ॐ ह्रीं हुं खेचच्छेक्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ।। इति मन्त्रः ।

अघोर मन्त्रः

अस्य श्री अघोर मन्त्रस्य अघोर ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः अघोर रुद्रोदेवता हुं वीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

ह्रीं स्फुर स्फुर हृदयाय नमः ।
प्रस्फुर प्रस्फुर शिरसे स्वाहा ।
घोर घोरतर तनुरूप शिखायै वषट् ।
चट् चट् प्रचट् प्रचट् कवचाय हुं ।
कह कह वम वम नेत्रत्रयाय वौषट् ।
बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट् अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्–

कालाभ्रामः कराग्रै परशुडमरुकौ खड्गखेटौ च वाणे-,
ष्वासौ शूलं कपालं दधदतिभयदो भीषणास्यस्त्रिनेत्रः ।
रक्ताकाराम्बरोऽहिप्रवर - घटितगात्रोरि - नागग्रहादीन्,
खादन्निष्टार्थदायी भवदनभिमतच्छित्तयेस्यादघोरः ।।

मन्त्रः–

ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोरतर तनुरूप चट् चट् प्रचट् प्रचट् कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्। इति मन्त्रः ।।

अघोर गायत्री–

ॐ वहुरूपाय विद्महे कोटराक्षाय धीमहि तन्नोऽघोरः प्रचोदयात् ।।

मुख शोधन– 'धूं धूं' का दस बार जप ।

कुल्लुका– 'ह्रीं' का दस बार जप ।

सेतु– 'ॐ' का दस बार जप ।

महासेतु– 'स्त्रीं' का दस बार जप ।

यन्त्रोद्धारः

अनुवतकल्पे यन्त्रन्तु लिखेत्पद्मदलाष्टकम् ।
षट्कोण कर्णिकान्तत्र वेदद्वारोपशोभितम् ।।

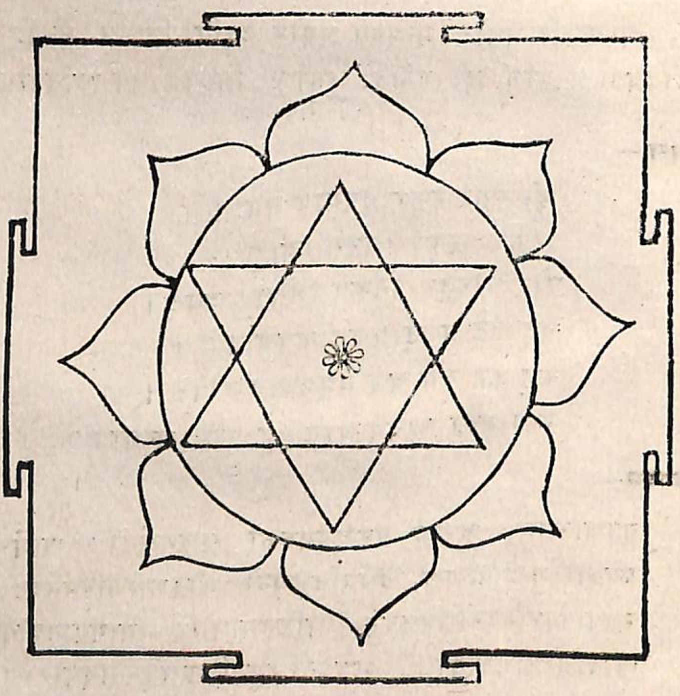

अथ मन्त्र प्रकरण

(१)

ॐ अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य नारसिंह ऋषिः पंक्तिश्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूं वीजं स्वाहा शक्तिः मम सकल शत्रु निग्रहे जपे विनियोगः ।

न्यासः–

धां हृदयाय नमः । अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
धीं शिरसे स्वाहा । तर्जनीभ्यां नमः ।
धूं शिखायै वषट् । मध्यमाभ्यां नमः ।
धैं कवचाय हुं । अनामिकाभ्यां नमः ।
धौं नेत्रत्रयाय वौषट् । कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
धः अस्त्राय फट् । करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यानम्–

ध्यायेत्कालाभ्रनीलां विकलितवदनां काकनासां विकर्णां ।
संमार्जन्युल्कशूर्पैर्युतमुसलकरां वक्रदन्तां विषास्याम् ।।
ज्येष्ठां निर्वाणवेषां भ्रकुटितनयनां मुक्तकेशामुदाराम् ।
शुष्कोत्तुङ्गातितिर्यक्स्तनभरयुगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम् ।।

मन्त्रः– धूं धूमावती स्वाहा ।। जपसंख्या सप्तसहस्र ।।

(२)

अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य स्कन्द ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्री धूमिनी देवता धूं वीजं ॐ कीलकं स्वाहाशक्तिः मम शत्रु क्षयार्थे जपे विनियोगः । न्यासः–पूर्ववत् ।

ध्यानम्–

श्यामाङ्गीं रक्तनयनां श्यामवस्त्रोत्तरीयकम् ।
वामहस्ते शोधनं च दक्षहस्ते तु शूर्पकम् ॥ १ ॥
धृत्वा विकीर्णकेशांच धूलि धूसर विग्रहाम् ।
लम्बोष्ठीं शुभ्रदशनां लम्बमानपयोधराम् ॥ २ ॥
संलग्नभ्रूयुगयुतां कटुदंष्ट्रोष्ठ वल्लभाम् ।
कृसरस्तु कुलुत्थोत्थं भग्नभाण्डतलेस्थितम् ॥ ३ ॥
तिलपिष्टसमायुक्तं मुहुर्मुहुश्च भक्षितम् ।
महिषीश्रृंगताटङ्की लम्बकर्णातिभीषणाम् ॥ ४ ॥

मन्त्रः– ॐ धूं धूं धूं धूमावति स्वाहा ।

एकलक्ष जपेनैव सिद्धिर्भवति देवता । तर्पणं होमोदशांशश्च ।

द्वितीय मन्त्रः– ॐ धूं धूं धूं धूं धूमावति स्वाहा ।
शेष पूर्वानुसार ।

अष्टाक्षरी मन्त्रोद्धार प्रयोग

ॐ अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः निचृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता शत्रु निग्रहणार्थे जपे विनियोगः ।

धां धीं धूं धैं धौं धः इति हृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्–

अत्युच्चा मलिनाम्बराऽखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना,
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चञ्चला ।
प्रस्वेदांबुचिताक्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरुक्षप्रभा,
ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मन्त्रिणा ॥ ४३ ॥

मन्त्रः– धूं धूं धूमावति स्वाहा ।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं श्मशाने विगताम्बरः ।
निशाभोजी दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ॥ ४४ ॥
पूर्वोक्ते पूजयेत्पीठे ज्येष्ठां शत्रुविनष्टये ।
केशरेषु षडङ्गानि पत्रस्था अष्टशक्तयः ॥ ४५ ॥
क्षुधा तृष्णारतिर्निद्रा निरतिर्दुर्गति रुषा ।
अक्षमेति ततो देवा इन्द्राद्या आयुधानि च ॥ ४६ ॥
एवं ज्येष्ठां समाराध्य सिद्धमन्त्रः प्रजायते ।
उपोष्य कृष्णभूता ये नग्नो मुक्तशिरोरुहः ॥ ४७ ॥
शून्यागारे श्मशाने वा कान्तारे भूधरेऽथवा ।
प्रत्यहं प्रजपेन्निर्भीर्ध्यायन्देवीं क्षपासनः ॥ ४८ ॥
एवं लक्षं जपन्मन्त्री नाशयेदचिरादरिम् ।
जुह्वता लवणोपेतां राजिकां निशि तत्फलम् ॥ ४९ ॥

(इति मन्त्रमहोदधौक्त मन्त्र विधानम्)

अथ शारदातिलकतन्त्रोक्त विधानम्

दान्तौ वर्धीश विन्द्वन्तौ वीजे धूमावति द्विठः ।
धूमावति मनुः प्रोक्तः शत्रुनिग्रहकारकः ॥ ११ ॥
विषेण कनकाम्भोभिः प्रेतकर्पट कल्पितम् ।
श्मशाने निखनेदेतत् शत्रूनुच्चाटयेद् द्रुतम् ॥ १२ ॥

उक्तं च धूमावती कल्पे–

अथाथः संप्रवक्ष्यामि विद्यां धूमावतीं पराम् ।
तस्य 'धूमावति स्वाहा' विद्या वेद्या षडक्षरी ॥
षडङ्गान्यत्र योज्यानि विद्यावीजै सविन्दुकैः ।
पूर्वसेवा जपेत्पूर्वं ज्येष्ठागारे दिगम्बरः ॥
रात्रौकृष्णचतुर्दश्यामनाशो मुक्तमूर्द्धजः ।
ततः शून्यालये शैले श्मशाने विपिनेऽपि वा ।
पुरो धूमावतीं ध्यायन् जपेल्लक्षं क्षपासनः ॥

ध्यानम्–

काकारूढ़ातिकृष्णा प्रविरलदशना मुक्तकेशी विरक्ता,
धूम्राक्षी क्षुतृषार्त्ता प्रतिभटचकिता चञ्चला कामलोला ।
हृष्टा पुष्टालसाङ्गी श्रमजलमलिना व्यक्तदर्पा विरूपा,
भूतिं धूमावतिं वः प्रदिशतु विपुलां धूतशूर्पाग्रहस्ता ॥

भूतघ्न यन्त्रम्–

हुताशगेहे द्वितयं लिखित्वा वैवस्वताय द्विषवर्णमन्त्रम् ।
मध्यान्तमा कलिपतमिन्दुबिम्बे यन्त्रं महाभूतपिशाचवैरि ॥१३॥

विद्वेषण यन्त्रम्–

नामालिख्य मकारकोष्ठयुगले कोणेषु तस्यालिखेत्,
मन्त्रज्ञो ङञणानकारसहितान् धूमावतीयन्त्रगान् ।
वीतं घुर्मुटिकादिना परमिदं वायुत्रिगेहावृतं,
यन्त्रं प्राणपरेतभूमिनिहितं विद्वेषणं स्याद् द्विषाम् ॥

घुर्मुटिका विद्या–

पूर्वं घुर्मुटिके युग्मं ततो मर्कटिके युगम् ।
घोरे विद्वेषकारिणि विद्वेषयोद्वेगकारिणि ॥
अथ घोराघोरयोः स्यादमुकामुकयोस्ततः ।
विद्वेषयो द्वयं हुं फट् विद्या घुर्मुटिकेरिता ॥

मन्त्र प्रकाशः–

घुर्मुटिके घुर्मुटिके मर्कटिके मर्कटिके घोरे विद्वेषकारिणि विद्वेषयोद्वेगकारिणि घोराघोरयो अमुकामुकयो विद्वेषय विद्वेषय हुं फट् । इति मन्त्रः ।

धूमावती मन्त्रः

अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य क्षपणक ऋषिः गायत्री छन्दः धूमावती देवता मम शत्रुविध्वंसे जपे विनियोगः ।

यां यीं यूं यैं यौं यः इति षडङ्गन्यासः ।

ध्यानम्–

काकारूढातिकृष्णा प्रविरलवदना मुक्तकेशी विवस्त्रा,
धूम्राक्षी क्षुद्रसक्ता प्रतिभयचकिता कम्पिताकायलोला ।
क्लिष्टा पुष्टालसाङ्गी जलदवसना व्यक्तगर्वा विरुद्धा,
भीती धूमावती यं पतिहतविधवा धूतशूर्पाग्रहस्ता ॥

मन्त्रः–

उरिधूमे कुलधूमे अन्तर्धूमे विश्वधूमे विश्वधूमे ममशत्रून् गति मतिं प्राणान् मारय मारय हुं फट् स्वाहा ॥ इति ।

ताम्रपट्टे विलिख्य अष्टसहस्रं संजप्य शत्रुगेहे निखनेत्, त्वस्य नाशो भवति ।

अभिचार एवं रोगनाशार्थे धूमावती मन्त्रः

संकल्पः–

पूर्वोक्त तिथौ मारण द्वेषण स्तंभन नानारोग मन्त्र यन्त्र तन्त्र प्रयोग विच्छिनार्थ धूमावती मन्त्र जपं करिष्ये ।

ध्यानम्–

धूम्रज्वालामुखी त्रिलोकजननीं धूम्राक्षवेषोज्वली ।
काकारूढकरी प्रसन्नवदना नीलाम्बराधारिणी ॥
हस्तेशूर्पधरा त्रिनेत्रसहिता कारुण्ययुक्ता शिवा ।
शत्रून् चूर्णय चूर्णयेति सततं धूमावती पाहि माम् ॥

मन्त्रः-

१. धूमावति यं रं खं धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा ॥
२. खं रं यं धुं शूलिनि दुष्टग्रहं हुं फट् फट् स्वाहा ॥

अस्य धूमावती मन्त्रस्य क्षपणक ऋषिः आगच्छन्दः श्मशान-वासिनी धूमावतीदेवता यं बीजं रं शक्तिः मारणोच्चाटविद्वेषणार्थे जपे विनियोगः ।

यां इत्यादिना षडङ्गम् ।

ध्यानम्-

द्विभुजां कृष्णवर्णां च त्रिनेत्रां सर्पभूषणाम् ।
कपालशूलंदधतीं चिन्तयेच्चितिवासिनीम् ॥

मन्त्रः-

ॐ यं रों धूं धूमावति ओरुच्चुडले विरि विरि अर्षल् अर्षल् वित्तेर कोण्डेन् कल्लन् नरम्बिनुल्ले अषण्डु अषण्डु इरिन्दु इरिन्दु कटुघ कटुघ विरिग विरिगप्पोह स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ।

अयुतं जपेत् । सर्षपमिश्रितचरुणा दशांश होमः ।

प्रयोग विधिः-

प्रेतवाससि शत्रोराकृतिं विलिख्य, धूमे अग्निधूमे स्वाहा, पादधूमे कालधूमे स्वाहा, हस्तयोर्धूमे स्वाहा, अन्तर्धूमे स्वाहा, नेत्रधूमे स्वाहा, मृत्युधूमे स्वाहा, श्रवणधूमे स्वाहा, अक्षिधूमे स्वाहा, नासिका-धूमे स्वाहा, यमधूमे स्वाहा, लिङ्गधूमे स्वाहा, ज्वालाधूमे स्वाहा, धूमे धूमावती स्वाहा ॥

एतान् मन्त्रान् हृदये विलिख्य तीक्ष्णाग्रैः कण्टकैः पुनः वेधयेत् अष्टविषैर्लेपयेत् पश्चात्तु तापयेत् ।

संस्थाप्याथ च वाल्मीके निखनेच्छत्रुमारणम् ।
भवेन्मण्डलतः पूर्वमुद्धृते मोक्ष एव हि ॥

गृहधूम वह्नि सूरण लवणौषण हेमवारिभिर्मिलितैः ।
विषमति भीषणमुक्तमहिताहितनिग्रहेषु हितम् ॥
सीसपट्टे लिखेद्यन्त्रं चतुष्षष्टि पदं ततः ।
चतुष्कोणेषु हुं शेषान् मन्त्रेणानेन पूरयेत् ॥
शूलाङ्कितं महायन्त्रं विषेण तु विलेपयेत् ।
कारस्करमये पत्रे निधाय निशि साधकः ॥
श्मशाने निखनेद्यन्त्रं शत्रूणां कुलनाशनम् ।

प्रयोगान्तरम्–

कारस्करस्य पत्रेप्यष्टविषेणैव चोररूपं हि ।
कृत्वा तु मन्त्रमेनं विलिखेद्गात्रेषु काकपक्षेण ॥
कारस्करं तु रूपं कृत्वा हृदि निक्षिपेच्च यन्त्रमिदम् ।
पश्चाद्भूमौ निखनेत्तदुपर्यथ वह्निमाशु सम्पूज्य ॥
कारस्करस्य समिधां जुहुयात्सम्यक् त्रिसाहस्रकम् ।
भूयाच्छत्रुविनाशस्तेन तथा चोद्धृते मोक्षः ॥

यन्त्रान्तरम्–

चतुष्पथाच्च वाल्मीकात् कुम्भकाराच्च मृत्तिकाम् ।
निर्गुण्डीं च तथा चाष्टविषमादाय बुद्धिमान् ॥
कनकस्य रसे सम्यक् पेषयेच्छव कर्पटे ।
यन्त्रं विरचयेन्मन्त्री त्रिकोणं मध्यतस्सुधीः ॥
तद्बहिर्द्वादशदलं वहिर्वायु पुरत्रयम् ।
तद्बहिश्चतुरश्रं स्याद अष्टशूलान्समालिखेत् ॥
त्रिकोणे च लिखेच्चोरमारणं कुरु कुर्विति ।
स्वाहान्तं षट्सु कोणेषु तथा धूमावती द्विठाम् ॥
दलद्वादशके मूलमन्त्रार्णान् शरसंख्यया ।
विभज्य विलिखेद् भूयो वायुगेहे हुताशनम् ॥
चतुष्कोणेषु हुंकारं शूलरन्ध्रे फडित्यपि ।
लिखेत्वैवं यन्त्रमिदं मन्त्रं जप्त्वा सहस्रकम् ॥

कुजवारे च मन्दांशे श्मशाने निखनेत्सुधीः ।
चोराणां मारणं चाशु भवेन्मोक्षस्तदुद्धृतौ ॥

प्रयोगान्तरम्–

कारस्करमयं कीलं सप्ताङ्गुलमनुत्तमम् ।
अयुतं साधितं कृत्वा शत्रुनामविदर्भितम् ॥
शत्रूणां गृहमध्ये तु निखनेद् गुलिकोदये ।
उच्चाटनं भवेत्तेषां कुलं चैव विनश्यति ॥

प्रयोगान्तरम्–

सप्ताङ्गुलमितं कीलं उन्मत्तस्य तु साधयेत् ।
अष्टोत्तरसहस्रं तु शत्रुनामविदर्भितम् ॥
शत्रूणां दक्षिणे पादे खनेन्मत्तो भविष्यति ।
स्वातिमेत्वर्जुनं कीलं स्वसप्ताङ्गुल मानतः ॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा शत्रोर्पदधूलिमिश्रितम् ।
श्मशाने निखनेच्छत्रोरष्टमे राशिके यदि ॥
मासेन मृत्युस्तस्य स्याद्यपि नोद्ध्रियते ततः ।
वैकङ्कतं विषाखायां कीलकं तु दशाङ्गुलम् ॥
दशाभिर्मन्त्रितं कृत्वा शत्रुमूत्रे खनेद्यदि ।
मूत्रस्तम्भो भवेत्तद्वन्नास्ति नास्ति प्रतिक्रिया ॥

अथ यन्त्रम्

ऋतुकोणस्थ वृत्तान्तः वीजं कोणे मनुं लिखेत् ।
कोणाग्र शूलके साध्यं ज्येष्ठा यन्त्रमिहोच्यते ॥
सम्पूज्य विधिवद्यन्त्रं जपित्वा तु सहस्रकम् ।
श्मशाने तु निशामध्ये निखनेत् वलिपूर्वकम् ॥
रिपुगेहेऽथवा कुर्यात्खननं वलिवर्जितम् ।
भूयो जपेत्त्रिरात्रं तु तत्कालोचित दिङ्मुखः ॥

धूमावती देवी

काकारूढातिकृष्णाभा भिन्नदन्ता विरागिणी ।
मुक्तकेशी सुधूम्राक्षी क्षुत्तृषार्ता भयातुरा ॥
मलिना श्रमणी रक्ता व्यक्तगर्भा विरोधिनी ।
धृतसर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा ॥

स्तम्भनोच्चाटने चैव निग्रहे चित्तविभ्रमे ।
सद्‌मक्षये च विद्वेषे प्रकुर्यात् सावधानतः ॥
अनात्माभिमुखीं ध्यात्वा गच्छन्तीं वैरिणांप्रति ।
यो जपेन्निशि साहस्रं तस्य शत्रु विनश्यति ॥
ताडयन्तीं महावेगां शूर्पेण रिपुवक्षसि ।
ध्यात्वा जपेत् सहस्रं तु नष्टचित्तो भवेद्रिपुः ॥
मार्जयन्ती क्षणात् शत्रोः धनधान्यादिकं चिरम् ।
ध्यात्वा अष्टोत्तरसहस्रं जपेद् भाग्यक्षयाय च ।
दीप्यमानोल्कके नैव दहन्तीं चापि वैरिणाम् ॥
ध्यात्वा जपेत्तथा मन्त्रं स्तम्भनायाम्बिके बुधः ।
त्रिकोणं विलिखेत्पूर्वं तन्मध्ये बीजमालिखेत् ॥
कोणाग्रे तु लिखेच्छूलं तच्छूलान्तर्लिखेन्मनुम् ।
तदग्रे विलिखेत्साध्यं ज्येष्ठा यन्त्रं वरानने ॥
सम्पूज्य विधिवद्यन्त्रं निशामध्ये श्मशानके ।
वलिपूर्वं खनित्वा तु पुनः स्नात्वा जपेन्मनुम् ॥
अष्टोत्तराष्टसाहस्रं दृढचित्तोऽरि दिङ्मुखः ।
वैरिणा तत्क्षणादेव यान्ति वैवस्वतं पुरम् ॥
विद्वेषणे तथा देवि जपेदेकाग्रमानसः ।
अन्योन्यकलहं क्षिप्रं शत्रूणां जायते ध्रुवम् ॥
विलोमेन जपेनैव निवृत्तिस्यात्सहस्रशः ।
नान्यमन्त्रैर्निवृत्तिः स्यात्प्रयत्नेपि कृतेऽम्बिके ॥
॥ इति यन्त्र विधानम् ॥

धूमावत्युच्चाटन मन्त्रः

अस्य धूमावतिमन्त्रस्य क्षपणक ऋषिः गायत्री छन्दः धूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः समुच्चाटे विनियोगः ।

ध्यानम्–

काकारूढातिकृष्णाभा भिन्नदन्ता विरागिणी ।
मुक्तकेशी सुधूम्राक्षी क्षुत्तृषार्ता भयातुरा ॥

चञ्चला चातिकामार्ता क्लिष्टा पुष्टलसाङ्गिका ।
मलिना श्रमणी रक्ता व्यक्तगर्भा विरोधिनी ॥
धृतसर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा ॥

मन्त्र:-

ॐ धूं धूमावति देवदत्तो धावतीति स्वाहा ॥
लक्षं जपेत् महेशानि जगदुच्चाटनं चरेत् ।

अथ आकाशभैरवकल्पोक्त धूमावती प्रयोग:

शिव उवाच-

वक्ष्येऽहं शृणु ते यन्त्रं धूमावत्या विशेषत: ।
विद्वेषे मारणे चैव क्रूरमत्याशु सिद्धिदम् ॥ १ ॥
त्रिकोणे विलिखेत्पूर्वं तन्मध्ये बीजमालिखेत् ।
कोणाग्रे तु लिखेच्छूलं तच्छूलान्तर्लिखेन्मनुम् ॥ २ ॥
तदग्रे विलिखेत्साध्यं ज्येष्ठा यन्त्रं वरानने ।
सम्पूज्य विधिवद्यन्त्रं निशामध्ये श्मशानके ॥ ३ ॥
बलिपूर्वं खनित्वा तु पुन: स्नात्वा जपेन्मनुम् ।
अष्टोत्तराष्टसाहस्रं दृढचित्तोऽरि दिङ्मुख: ॥ ४ ॥
वैरिणस्तत्क्षणादेव यान्ति वैवस्वतं पुरम् ।
विद्वेषणे तथा देवि जपेदेकाग्रमानस: ॥ ५ ॥
अन्योन्यकलहं क्षिप्रं शत्रूणां जायते ध्रुवम् ।
विलोमेन जपेनैव निवृत्ति: स्यात्सहस्रधा ।
अन्यमन्त्रैर्निवृत्ति: स्यात्प्रयत्नेन कृतेऽम्बिके ॥ ६ ॥

मालामन्त्र:

ॐ नमो भगवति शत्रुसंहारिणि सर्वरोगप्रशमिनि सकलरिपु-
धनधान्यक्षयं कुरु कुरु धूमावतीश्वरि शरभशालुव पक्षिराजप्रिये

अमृत कलश वरदाभय कमल कराम्बुजे जगत्क्षोभिणि देवदत्तस्य शरीरे वर्त्तमान वर्तिष्यमान सकलरोगं मोचय मोचय समस्त भूतं नाशय नाशय सर्वोन्मादशमनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

मालामन्त्रं परं गुह्यं महारोगप्रशान्तिदम् ।
महाभूतहरं श्रेष्ठं महोन्मादहरं परम् ॥ ७ ॥
मन्त्रेणानेन संमंत्र्य दशवारं तु संस्पृशन् ।
पाययेदौषधं यत्तत्सर्वव्याधिहरं भवेत् ॥ ८ ॥

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर-सम्वादे धूमावतीप्रयोगो नाम चतुःपञ्चाशोऽध्यायः ॥

धूमावती मालामन्त्रः

ॐ धूं धूमावति चतुर्दश भुवन निवासिनि सकलग्रहोच्चाटिनि सकलशत्रु रक्तमांस भक्षिणि ममशरीर रक्षिणि भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षसादि सकल ग्रह संहारिणि मम शरीर परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र निवारिणि आत्ममन्त्र यन्त्र तन्त्र प्रकाशिनि मम शरीरे परकट्टु परवाटु परवेटु परजप परहोम परशून्य परदृष्टि परकौतुक परऔषधादिच्छेदिनि पट्टेरि काट्टेरि कन्नेरि पाट्टेरि शुनक काट्टेरि प्ररिटि काट्टेरि दर्भ काट्टेरि पाताल काट्टेरि सकलजात काट्टेरि ग्रहच्छेदिनि मम नाभि कमलस्थान संचारग्रह संहारिणि धूम्रलोचिनि उग्ररूपिणि सकलविषच्छेदिनि सकल विषसञ्चयान् नाशय नाशय मारय मारय विषमज्वर तापज्वर शीतज्वर वातज्वर लूतज्वर पैत्यज्वर श्लेष्मज्वर मोहज्वर सन्निपातज्वर पातालकाट्टेरिज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर कृत्तिमज्वर नानादोषज्वर सकलरोगनिवारिणि सकलग्रहच्छेदिनि शिरश्शूल अक्षिशूल कुक्षिशूल कननिशूल नाभिशूल कटिशूल पार्श्वशूल गण्डशूल गुल्मशूल अङ्गशूल सकलशूलान् निर्धूमय निर्धूमय सकलग्रहान्निवारय निवारय रां रां रां रां रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां ख्रें ख्रें ख्रें ख्रें ख्रें ध्रूं ध्रूं ध्रूं ध्रूं ध्रूं फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें

धूं धूं धूं धूं धूं धूमावती मां रक्ष रक्ष शीघ्रं शीघ्रं आगच्छागच्छ क्षिप्रमेव आरोग्यं कुरु कुरु हुं फट् धूं धूं धूमावती स्वाहा ॥

फेत्कारिणीतन्त्रोक्त धूमावती विधानम्

धूमावती प्रयोगोऽयमधुना लिख्यते मया ।
दान्तावर्धीश विद्वन्तौ वीजे धूमावति द्विषम् ॥
धूमावती मनु प्रोक्तः शत्रुनिग्रहकारकः ।
षडङ्गाजातिसंयुक्तं कल्पयेत्तेन मन्त्रवित् ॥
पिप्पलादो मुनिश्छन्दो निवृदेश तु देवता ।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ॥
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ॥
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धृतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धलोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ॥
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ।
एवं विधां समाध्याये ततः कर्म समाचरेत् ॥
तच्चतुर्थेन वर्णेन षष्ठस्वरयुतेन च ।
षड्दीर्घजातियुक्तेन कुर्यादङ्गानि मन्त्रवित् ॥
जपेत् कृष्णचतुर्दश्यां पुरश्चरणसिद्धये ।
उपवासरतोमन्त्री शून्यागारे दिवानिशम् ॥
श्मशाने विपिने वापि जपेल्लक्षं तु वाग्यतः ।
सोष्णीष आर्द्रवासाश्च पुरश्चरणकर्मणि ॥
स्वाख्योपर्यस्त्रमालिख्य तस्मिंस्थाप्य शिवं जपेत् ।
अवष्टभ्य शिवं शत्रुनाम्नाथ प्रजपेन्मनून् ॥
सहस्रादूर्ध्वतः शत्रुर्ज्वरेण परिगृह्यते ।
पंचगव्येन शान्तिः स्याज्ज्वरस्य पयसापि वा ॥
मन्त्राद्यक्षरमालिख्य शत्रुनाम ततः परम् ।
द्वितीयार्णं मनोः शत्रोर्नामैवं मनुमालिखेत् ॥

वनेऽयुतजपाच्छत्रोर्निश्चितं मरणं भवेत् ।
कृत्वा मन्त्रैः रिपोराख्यामरण्ये यामिनीदले ।।
उन्मादो जायते शत्रोर्मनोरयुत जापतः ।
दग्ध्वा काकं श्मशानाग्नौ तद्भस्मादाय मन्त्रितम् ।।
विरोधिनाम्नाष्टाशासु सद्यःउच्चाटनं रिपोः ।
श्मशानभस्मना कृत्वा शिवं तस्योपरि न्यसेत् ।।
विरोधिनाम संरुद्धं कृष्णपक्षे समुच्चरेत् ।
महिषीक्षीरधूपं च यद्यच्छत्रु विपत्करम् ।।
महिषीरूपेणागत्य स्वप्ने शत्रून्निपातयेत् ।
प्रहृत्वा करतलेनासां तद्द्वयोर्ध्वं रिपोर्न्यसेत् ।।
जलस्थः प्रजपेन्मन्त्री हूंकारं नाशयेदरीन् ।
दद्याद्धूपं साध्यनाम्ना सद्यो विद्वेषयेदरीम् ।।
श्मशानभस्मना कृत्वा लिंगपुष्पादिनार्चयेत् ।
भगवन्निति संभाष्य मनसा कर्म चिन्तयन् ।।
निम्बकाकच्छदानेकीकृत्य चाष्टशतं हुनेत् ।
दद्याद्धूपं साध्यनाम्ना सद्यो विद्वेषयेदरीन् ।।
चिताकाष्ठानले क्षीरहोमाच्छान्तिः प्रजायते ।
रजोधूप प्रदानेन गृध्ररूपेण कालिका ।।
मारयत्यरिमागत्य शान्तिर्निर्माल्य धूपतः ।
वराहवालधूपेन हन्याच्छूकररूपिणी ।।
अश्वत्थपत्रहोमेन शान्तिर्भवति नान्यथा ।
शान्तिः सर्वाभिचारश्च पञ्चगव्येन जायते ।
क्षीरेण वापि देवेशि मधुरत्रितयेन वा ।।
काष्ठे क्षीरतरोर्विदर्भ्य विलिखेन्मन्त्रेण नामाक्षरं,
जप्त्वालिख्य पदद्वयेतु निखनेद्विच्चाटनं विद्विषाम् ।
तत्पादद्वयधूलिकीर्णहविषा दद्याद् द्विजेभ्यो वलिम्,
तज्जप्तं चितिभस्म कीर्णितमरेर्गेहे च तद्वद् भवेत् ।।
चूर्णं तस्य तु पल्लवे विनिहितं जप्तं सहस्राधिकं ।
क्रान्तं शत्रुगृहेषु तच्छिरसि वा तेषां कुलोच्चाटनम् ।।

ज्यष्ठारामे श्मशाने वा निर्माल्ये पादगोचरे ।
गर्दभावास भूमौ वा श्मशाने वा चतुष्पथे ॥
ऊषरे मेहनाद्‌भूमौ पुष्पितावास मेहयोः ।
आनीय शर्करां मन्त्री दिग्वासा दक्षिणामुखः ॥
श्मशानलोष्ठे निक्षिप्य तत्राग्नौ परितापयेत् ।
चूर्णं तत्तु जपेल्लक्षं निःक्षिपेत्तत्र वेश्मनि ॥
सेनामध्ये च सर्वेषां पक्षादुच्चाटनं भवेत् ।
गर्ते पिपीलिकानां च पदधूलीयुतान् कणान् ॥
सघृतान् सप्तरात्रं तु जुहुयान्मन्त्रविन्निशि ।
भ्रमते काकवत् सर्वां महीं तां मरणादिषु ॥
कृत्वा प्रतिकृतिं शत्रोर्जन्मवृक्षेण मन्त्रवित् ।
कृत्वा प्रतिष्ठा प्राणश्च विद्धां मर्मसु कण्टकैः ॥
आयासैर्मर्मव्यावर्त्य वक्ष्यमाणैः प्रवेशयेत् ।
पूर्वोक्त शर्कराभिस्तु जप्त्वा नित्यं प्रतापयेत् ॥
सप्तरात्रेण तस्यापि भवत्युच्चाटनं ध्रुवम् ।
मुखे शल्यद्वये लेख्यौ सारमेयवराहयोः ॥
मन्त्रेण गर्भितौ साध्यौ तौ शरावद्वयादिषु ।
धत्तूररससंयुक्त चिताङ्गारेण मन्त्रिणा ॥
व्यत्यस्य वृषणे वध्वा केशपाशेन तं जपेत् ।
श्मशाने शत्रुमार्गे वा तद्‌गृहे निखनेन्निशि ॥
विद्वेषणं भवेत्सद्यो गौरीशंकरयोरिव ।
अश्वत्थत्वचि मन्त्रार्णैं दर्भितं साध्यमालिखेत् ॥
शल्यं विषतरोस्तद्वत् जप्त्वा तद्‌धृदये न्यसेत् ।
पूर्वोक्त कण्टकैर्विद्धां जपेत् स्पृष्ट्वा शतंशतम् ।
विद्विष्टौ भवतस्तौ तु नाम्नामपि च तत्क्षणात ॥
वाय्वर्णानभितो विलिख्य विलिखेत् कोणेषु मन्त्राक्षरैः,
संरुद्धन् परितः प्रभञ्जनगृहं मध्ये च साध्यं पृथक् ।
अङ्गारै कनकोद्‌भवैरपि पदैर्मन्त्रं जपन् ताडयेत्,
यायादेष वशे कुजार्कदिवसे भूलोक विद्वेष्यताम् ॥

आपाद्य पूर्वां मूर्ति च शत्रोरालिख्य शोषयेत् ।
व्योषाग्निमण्डलोन्मत्तहिङ्गु सिद्धार्थ सूरणैः ॥
पिण्डैर्लवण सम्भूतैरन्मत्त द्रवसंयुतैः ।
पेषयित्वा तेन सम्यक् लिखेन्मन्त्रं मनुं जपेत् ॥
वलिमन्त्रे खनेत् कीलमुक्तरूपं तथोपरि ।
वह्नि प्रज्वाल्य तत्काले द्रव्ययुक्तं हुनेज्जपेत् ॥
निःक्षिप्य प्रतिमां तत्र हुनेन्नित्यं जपेन्मनुम् ।
सप्तरात्रं तत्कुण्डे शून्यागारे च वा हुनेत् ॥
त्रिकोण शूल दीप्ताग्रं मेखलापुत्तलान्वितम् ।
तत्रापि निखनेत् कीलं वह्नि प्रज्वाल्य पूर्ववत् ॥
ततः प्रतिकृतिं मन्त्री वह्नेरुपरि लम्बयेत् ।
उक्त द्रव्येण तां लिप्त्वा ऊर्ध्वपादामधोमुखीम् ॥
रक्तद्रवे समाराध्य प्रज्वाल्य विषवृक्षजैः ।
इन्धनैः प्रतिमां तां च समितपुष्पयुतां हुनेत् ॥
आननादिभिरामृत्योर्वशमेति न संशयः ॥
॥ इति फेत्कारिणीतन्त्रोक्त धूमावती प्रयोगाः ॥

ज्येष्ठा (धूमावती) कल्प

अथातो ज्येष्ठाकल्पं व्याख्यास्यामः-

तिलतैलमाज्यं पयोदधि सक्तून लाजान् करम्मान् कृष्णानि वासांसीति सम्भारानुपकल्पयते ।

प्रोष्ठपादायामनुराधायां वा हविष्यं भुञ्जीथ ।

अथ श्वोभूते ज्येष्ठामनुस्मरन्नुत्थाय देवागारे रहस्यप्रदेशे बा यत्र रोचते मनस्तत्र स्थण्डिल्यं कृत्वाऽथ देवयजनोल्लेखन प्रभृत्या प्रणीताभ्यः कृत्वाऽग्रेणाग्नि ज्येष्ठादेवीं आवाहयति-

यस्यास्सिंहा रथे युक्ता व्याघ्राश्चाप्यनुगामिनः ।
तामिमां पुण्डरीकाक्षीं ज्येष्ठामावाह्याम्यहम् ॥

इत्यावाह्य "इहलोकाकीर्तये नमः । परलोकाकीर्तये नमः । श्रियै नमः । ज्येष्ठायै नमः । सत्यायै नमः । कपिलपत्न्यै नमः ।

कपिलहृदयायै नमः। कुम्भ्यै नमः। प्रकुम्भिन्यै नमः। ज्यायायै नमः। वरदायै नमः। हस्तिमुखायै नमः। विघ्नपार्षदायै नमः। विघ्नपार्षद्यै नमः।" इति तर्पयति।

'आपोहिष्ठामयोभुवः हिरण्यवर्णाः पवमानस्सुवर्चनः' इत्येतेनानुवाकेन मार्जयित्वा तैरेव नामधेयैर्गन्धपुष्पधूपदीपैः 'अमुष्यै नमोऽमुष्यै नमः' इति परिधानप्रभृत्याऽग्निमुखात्कृत्वा पक्वान्जुहोति- 'इन्द्रोज्येष्ठामनु नक्षत्रमेति' इति पुरोऽनुवाक्यमनूच्य 'पुरन्दरायवृषभायधृष्णवे' इति याज्यया जुहोति।

अथाज्याहुतिरुपजुहोति–

इन्द्राय स्याहा। ज्येष्ठाय स्वाहा। श्रेष्ठाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। इति नमस्सुते निरऋते इति षडभिरनुच्छन्दसम्।

अथ कुत्संर्जुहोति–

'देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां भूर्भुवस्स्वरों ज्येष्ठायै हविर्निवेदयामि' इति निवेदयति।

अथ दिशां वलिं दत्वा गन्धमाल्ये द्वे वाससी निवेद्यं दत्वाऽन्नं च ब्राह्मणेभ्यो दत्वा 'नमस्सुते निरऋते' इति षड्भिरुपस्थाय स्विष्टकृत्प्रभृति।

सिद्धमाद्येनुवर प्रदानात्–

यस्यास्सिंहा रथे युक्ता व्याघ्राश्चाप्यनुयायिनः।
तामिमां पुण्डरीकाक्षीं ज्येष्ठामुद्वासयाम्यहम्॥

इत्युद्वास्य ज्येष्ठामन्त्रं सहस्रकृत्व आवर्तयेच्छतकृत्वोऽपरिमितकृत्वो वा दशवारम्।

शाकयावकभैक्षमूल फलाशी अधश्शायीश्वोभूते तथैवाभ्यर्च्य षण्मासादूर्ध्वं समाचरन् नित्यानामाशास्यान् सर्वान् कामानवाप्नोति ह स्माह भगवान् वोधायनः।

॥ इति वोधायनग्रह्यशेषे तृतीय प्रश्ने नवमोऽध्यायः॥

(वोधायनग्रह्यसूत्रम् (मैसूर संस्करण) से उद्धृत पृष्ठ २९४ से २९६ तक)

अथ स्तोत्रप्रकरणम्

श्री धूमावती कवचम्

श्री पार्वत्युवाच -

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतं विस्तरतो मया ।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे ॥

श्री भैरव उवाच–

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे ।
कवचं श्री धूमावत्या शत्रुनिग्रहकारकम् ॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः ।
योगिनो भवच्छत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥

ॐ अस्य श्री धूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री धूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकम् शत्रुहनने पाठे विनियोगः ।

ॐ धूं वीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु ।
धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु ॥
दीर्घातूदर मध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा ।
शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ॥
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् ।
सर्वाविद्याऽवतु कण्ठां विवर्णा वाहुयुग्मकम् ॥
चञ्चला हृदयम्पातु दुष्टा पार्श्वं सदाऽवतु ।
धूतहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥

प्रवृद्धरोमा तु भृषं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ।।
सर्वाङ्गं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी ।
इति ते कवचं पुण्यं कथितं भुविदुर्लभम् ।।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे ।
पठनीयं महादेवि त्रिसंध्यं ध्यानतत्परैः ।।
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैवसंस्पृशेत् ।।

।। इति भैरवीभैरवसम्वादे धूमावतीतत्वे धूमावतीकवचं सम्पूर्णम् ।।

धूमावती स्तोत्रम्

प्रातर्या स्यात् कुमारी कुसुमकलिकया जापमालां जपन्ति
मध्याह्ने प्रौढ़रूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती
सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ।।
वद्ध्वाखट्वाङ्गकोटौ कपिलवरजटा मण्डलं पद्मयोनेः
कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसिशिरः शेखरं तार्क्ष्यपक्षैः ।
पूर्णरक्तैः सुराणां यममहिष महाश्रृङ्गमादाय पाणौ
पायाद्वो वन्द्यमानः प्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ।।
चर्वन्तीमस्थिखंण्डं प्रकट कटकटा शब्दसंघातमुग्रं
कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहा हास्यमुग्रं कृशाङ्गी ।
नित्यं नित्यप्रसक्तं डमरुडिमडिमां स्फारयन्तीं मुखाब्जं
पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमा जल्पमाना भ्रमन्ती ।।
टं टं टं टं ट टं टा प्रकट टमटमा नादघन्टां वहन्ती
स्फें स्फें स्फें स्फारकारा प्रकटकितहसा नादसंघट्ट भीमा ।
लोलं मुण्डाग्रमाला ललहलहलहा लोललोलाग्रवाचं
चर्वन्ती चण्डमुण्डं मटमटमटिते चर्षयन्ती पुनातु ।।
वामेकर्णे मृगाङ्कं प्रलयपरिगतं दक्षिणे सूर्यबिम्बम्
कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मूण्डमालां ।

स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालहारं
संहारे धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ।।
तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत् कर्णिकाक्रान्तकर्णा,
लौहेनेकेन कृत्वा चरणनलिनकामात्मनः पादशोभाम् ।
दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं मायया कर्णपूरा
वर्षिण्यादि प्रवद्धा ध्वजविततभुजा साऽसिदेवित्वमेव ।।
संग्रामे हेतिकृत्वै सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभि–
र्मालामावद्ध्यमूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ।
दुष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघना वृद्धनागेन्द्र काञ्ची
शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदा ताम्रनेत्रा निशायम् ।।
दंष्ट्रा रौद्रेमुखेऽस्मिस्तव विशति जगद्देवि सर्वक्षणार्धात्
संसार स्यातकाले नररुधिरवशा सम्प्लवे भूमधूम्रे ।
काली कापालिकी सा शव शयनतरा योगिनी योगमुद्रा
रक्तारुद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघन्टा ।।

फलश्रुति–

धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद् विनिवारकम् ।
यः पठेत साधको भक्त्या सिद्धिं विन्दति वाञ्छितम् ।।
महापदि महाघोरे महारोगे महारणे ।
शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा ।।
पठेत् स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग् भवेत् ।
देव दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ।।
सिंह व्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्र स्मरण मात्रतः ।
दराद्दूरतरं यान्ति किं पुनर्मानुषादयः ।।
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिध्यति भूतले ।
सर्व शान्तिर्भवेद्देवि अन्ते निर्वाणतां व्रजेत् ।।

।। इत्यूर्ध्वाम्नाये धूमावती स्तोत्रं समाप्तम् ।।

अथ धूमावतीहृदयम्

ॐ अस्य श्री धूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री धूमावती देवता धूं वीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वशत्रुसंहारणे पाठे विनियोगः ।

धां धीं धूं धैं धौं धः करहृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्–

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तमालां वराढ्यां,
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम् ।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां,
ध्यायेद्धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकिलन्मधुकैटभौ ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खण्डिनी खलरक्षसाम् ।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम् ॥
गुणागारा गम्यगुणा या गुणा गुणवर्द्धिनी ।
गीतावेदार्थ तत्वज्ञैः धूमावतीं भजामि ताम् ॥
घूर्ण घूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना ।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम् ॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम् ।
चण्डाट्टहासिनीदेवीं भजे धूमावतीमहम् ॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छत्रं छिन्नमस्तास्वरूपिणीम् ।
छेदिनीं दुष्टसंघानां भजे धूमावतीमहम् ॥
जाता या चित्तादेवै असुराणां विघातिनीम् ।
जल्पतीं वहुगर्जन्तीं भजे तां धूम्रस्वरूपिणीम् ॥
झंकारकारिणा झंझा झंझमाझम वादिनीम् ।
झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥

टीपटंकारसंयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम् ।
घोराघनघटाटोपां वन्दे धूमावतीमहम् ॥
ठं ठं ठं ठं मनुप्रीति ठः ठः मन्त्रस्वरूपिणीम् ।
ठमकाद्दव गति प्रीतां भजे धूमावतीमहम् ॥
डमरु डिमडिमा रावां डाकिनीगणमण्डिताम् ।
डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥
ढक्वानादेन सन्तुष्टां ढक्वावादक सिद्धिदाम् ।
ढक्वावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥
तत्ववार्त्ता प्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम् ।
तारस्वरूपिणी तारां भजे धूमावतीमहम् ॥
थां थीं थूं थैं मन्त्ररूपां थैं थौं थं थः स्वरूपिणीम् ।
थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम् ॥
दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम् ।
देवदैत्यकृतध्वंसां वन्दे धूमावतीमहम् ॥
ध्वान्ताकारां धकध्वंसां मुक्तधर्मालधारिणीम् ।
धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥
नर्तकी नटनप्रीता नाट्यकर्मविवर्द्धिनीम् ।
नारसिंही नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥
पार्वतीपति सम्पूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम् ।
पद्मारूपां पद्मपूज्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥
फुत्कारसहितस्वासां फट् मन्त्र फलदायिनीम् ।
फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥
बलिपूज्यां वलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् ।
ब्रह्मादिवन्दितां विद्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥
भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशी स्वरूपिणीम् ।
भक्त भव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥
मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् ।
मत्स्यमांसमदास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥

योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् ।
यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ।।
रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम् ।
रमेश रमणी पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ।।
लक्षलीला कलारक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम् ।
लम्बितां बीजकोशाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम् ।।
वकपूज्यपदाम्भोजां वकध्यानपरायणाम् ।
बालां वकारि सन्ध्येयां वन्दे धूमावतीमहम् ।।
शङ्करीं शङ्करप्राणां संकटध्वंसकारिणीम् ।
शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ।।
षडाननारिसंहन्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम् ।
षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ।।
सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम् ।
सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ।।
हेरम्बजननीं योग्यां हास्य-लास्य-विहारिणीम् ।
हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम् ।।
क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम् ।
क्षणदेशेज्य पादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ।।
चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादि नामभिः ।
कृतन्तु हृदयस्तोत्रं धूमावत्यासु सिद्धिदाम् ।।
य इदं पठतिस्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् ।
स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्या प्रसादतः ।।
पठन् एकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः ।
तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।

।। इति धूमावती हृदयं समाप्तम् ।।

धूमावती शतनाम स्तोत्रम्

ईश्वर उवाच–

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा ।
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥ १ ॥
अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता ।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रपूजिता ॥ २ ॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी ।
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥ ३ ॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा ।
कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥ ४ ॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललजिह्वा दिगम्बरी ॥ ५ ॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका ।
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥ ६ ॥
क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी ।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥ ७ ॥
चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिस्वना ।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनासिनी ॥ ८ ॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी ।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती ॥ ९ ॥
कुम्भस्तनी मदोन्मत्ता मदिरापानविह्वला ।
चतुर्भुजा ललजिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥१०॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी ।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥ ११ ॥

निर्मांसा च निराकारा धूतहस्ता वरान्विता ।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ।। १२ ।।
महाकाल स्वरूपा च महाकाल प्रपूजिता ।
महादेवप्रिया मेधा महासङ्कटनाशिनी ।। १३ ।।
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रु विनाशिनी ।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ।। १४ ।।
भेरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा वहुरूपिणी ।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ।। १५ ।।
त्रिमूर्त्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी ।
इति धूमा महत्स्तोत्र नाम्नामष्टशतात्मकम् ।। १६ ।।
मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम् ।
कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ।। १७ ।।
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्योमुच्यते सर्वसङ्कटैः ।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ।। १८ ।।
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पद्प्रदायकम् ।। १९ ।।

।। इति धूमावती अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।।

-:०-

धूमावती सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्री भैरव्युवाच--

धूमावत्या धर्मरात्र्या कथयस्व महेश्वर ।
सहस्रनाम स्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

श्री भैरव उवाच--

श्रृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणि ।
सहस्रनाम स्तोत्रं मे भवशत्रुविनाशनम् ॥

ॐ अस्य श्री धूमावती सहस्रनाम स्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दो धूमावती देवता शत्रु विनिग्रहे पाठे विनियोगः ॥

धूमा धूमावती धूमा धूमपानपरायणा ।
धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वर निवासिनी ॥
अनन्ताऽनन्तरूपा च अकाराकाररूपिणी ।
आद्या आनन्ददा नन्दा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥
धन धान्यार्थ वाणीदा यशोधर्म प्रियेष्टदा ।
भाग्य सौभाग्य भक्तिस्था गृहपर्वतवासिनी ॥
राम रावण सुग्रीव मोहदा हनुमत्प्रिया ।
वेद शास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छन्दः स्वरूपिणी ॥
चातुर्यचारु रुचिरा रञ्जन प्रेमतोषदा ।
कमलासन सुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ॥
चतुराचारुकेशी च चातुर्वर्गप्रदा मुदा ।
कला कालधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा ॥
हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना ।
दम्भमोहक्रोध लोभ स्नेहद्वेषहरा परा ॥
नरदेव करी रामा रामानन्द मनोहरा ।
योग भोग क्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥

दानमान ज्ञानमान पानगान सुखप्रदा ।
गजगोऽश्व पदागञ्जा भूतिदा भूतनाशिनी ॥
भवभावा तथा वाला वरदा हरवल्लभा ।
भगभङ्गभया माला मालती तालनाहृदा ॥
जालवाल हालकाल कपाल प्रियवादिनी ।
करञ्जशील गुञ्जाढ्या चूताङ्कुरनिवासिनी ॥
पनसस्था पानसक्ता पनसेश कुटुम्बिनी ।
पावनी पावनाधारा पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥
पूता पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी ।
परेशी परदा पारा परात्मा परमोहिनी ॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी ।
जननी जयिनी जाया जिता जिनजयप्रदा ॥
कीर्तिर्ज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी ।
काव्य व्याकरणज्ञाना प्रज्ञा प्रज्ञानदायिनी ॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता ।
परावरेज्या वरदा पारदा शारदादरा ॥
दारिणी देवदूती च मदना मदनामदा ।
परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञान कार्यकरी शुभा ।
शोभिनी शुभ्रमथिनी निशुम्भासुरमर्दिनी ॥
शाम्भवी शम्भुपत्नी च शम्भुजाया शुभानना ।
शाङ्करी शङ्कराराध्या सन्ध्या सन्ध्यासुधर्मिणी ॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी ।
शैवी शिवलया शैला शैलराजप्रिया सदा ॥
शर्वरी शवरी शम्भुः सुधाढ्या सौधवासिनी ।
सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवीरवा ॥
गौराङ्गी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः ।
गौ गौर्गव्य स्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ॥

गणेश गणदा गुण्या गुणा गौरववाञ्छिता ।
गणमाता गणाराध्या गणकोटिविनाशिनी ॥
दुर्गा दुर्जनहन्त्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी ।
स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ॥
दुर्निरीक्ष्या दुरा दुःस्था दौःस्थभञ्जनकारिणी ।
श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ॥
कर्मनर्मकरी नर्मा धर्माधर्मविनाशिनी ।
गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ॥
गङ्गा भागीरथी भङ्गा भगा भाग्यविवर्द्धिनी ।
भवानी भवहन्त्री च भैरवी भैरवीसमा ॥
भीमा भैरवदा भैमी भीमानन्दप्रदायिनी ।
शरण्या शरणा शम्या शशिनी शङ्खनाशिनी ॥
गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी ।
जनमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ॥
जिता जाया च विजया विजया जयदायिनी ।
कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरा गदा ॥
गर्वा गरुत्मती घर्मा घर्घरा घोरनादिनी ।
चराचरी चराराध्या छिन्ना छिन्नमनोरथा ॥
छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी ।
झकारा झीष्कृतिष्टीका टङ्का टङ्कारनादिनी ॥
ठीका ठक्कुर ठक्काङ्गी ठठठाङ्कार ढुण्ढुरा ।
ढुण्ढीताराजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ॥
थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी ।
धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ॥
पद्मा पद्मावती पीता स्फान्ता फूत्कारकारिणी ।
फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥
भवाराध्या भवादक्षा भगाली मन्दगामिनी ।
मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ॥

याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललिता लता ।
लङ्केश्वरी वाक्प्रदा वाच्या सदाश्रमवासिनी ।।
श्रान्ता शकाररूपा च षकार खरवाहना ।
सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ।।
हराराध्या वालवाच लवङ्गप्रेमतोषिता ।
क्षपा क्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी ।।
कालिका कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया ।
शिवा शन्दायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ।।
भवानी भवमूर्तिश्च सर्वाणी सर्वमङ्गला ।
शत्रुविद्राविणी शैवी शुम्भासुरविनाशिनी ।।
धकारमन्त्ररूपा च धूंबीज परितोषिता ।
धनाध्यक्षस्तुता धीरा धरारूपा धरावती ।।
चर्विणी चन्द्रपूज्या च छन्दोरूपा छटावती ।
छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ।।
वल्गिनी वर्द्धिनी वन्द्या वेदमाता वुधस्तुता ।
धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ।।
गर्विणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता ।
धर्मिणी धर्मरूपा च घन्टानादपरायणा ।।
घंटानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी ।
कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया ।।
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी ।
वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ।।
घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी ।
धूंबीजा धून्जपानन्दा धूंबीजजपतोषिता ।।
धूंबीजजपासक्ता धूं धूं वींजपरायणा ।
धूङ्कारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता ।।
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता ।
अपारा पूरणी पूर्णा पूर्णिमा परिवन्दिता ।।

फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी ।
फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलान्विता ॥
वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा ।
विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥
नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा ।
तारिणी तत्वरूपा च तत्वज्ञानपरायणा ॥
स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी ।
स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥
शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी ।
शारिणी शङ्खिनी शुद्धा शङ्खासुरविनाशिनी ॥
शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीश प्रपूजिता ।
शर्वरी जागृता योग्या योगिनी योगवन्दिता ॥
योगिनीगणसंसेव्या योगिनी योगभाविता ।
योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥
योगभावा योगयुक्ता यामिनीपतिवन्दिता ।
अयोग्या योधिनी योद्ध्री युद्धकर्मविशारदा ॥
युद्धमार्गरतानान्ता युद्धस्थाननिवासिनी ।
सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धगेह निवासिनी ॥
सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धान्तकारिणी ।
सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवन्द्या सुसिद्धिदा ॥
साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी ।
साधनीया साध्यसाध्या साध्यसङ्घ सुशोभिणी ॥
साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसन्ततिदायिनी ।
साधुपूज्या साधुवन्द्या साधुसन्दर्शनोद्यता ॥
साधुदृष्टा साधुपृष्ठा साधुपोषणतत्परा ।
सात्विकी सत्वसंसिद्धा सत्वसेव्या सुखोदया ॥
सत्ववृद्धिकरी शान्ता सत्वसंहर्षमानसा ।
सत्वज्ञाना सत्वविद्या सत्वसिद्धान्तकारिणी ॥

सत्ववृद्धि सत्वसिद्धि सत्वसम्पन्नमानसा ।
चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥
छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्त्ता क्षमाप्रिया ।
हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ता हठोद्यमा ॥
हठकार्या हठधर्मा हठकर्मपरायणा ।
हठसम्भोगनिरता हठात्कार रतिप्रिया ॥
हठ सम्भेदिनी हृद्या हृद्यवार्त्ता हरिप्रिया ।
हरिणी हरणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥
हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगणहर्षदा ।
हरिणीगणसंहर्त्री हरिणीपरिपोषिका ॥
हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरस्सरा ।
दीना दीनाकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा ॥
द्रविणाचलसंवासा द्रविता द्रव्यसंयुता ।
दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः ॥
दृढा द्विष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभञ्जिनी ।
दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥
देवतार्त्तिहरा दुष्टदैत्यसङ्घविदारिणी ।
दुष्टदानवहन्त्री च दुष्टदैत्यनिषूदनी ॥
देवता प्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी ।
नटनायकसंसेव्या नर्तकी नर्तकप्रिया ॥
नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी ।
नवीननूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी ॥
नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालङ्कारशोभिता ।
नकारवादिनी नम्या नवभूषणभूषिता ॥
नीचमार्गा नीचभूमिः नीचमार्गगतिर्गतिः ।
नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानन्द प्रदायिनी ॥
नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी ।
नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ॥

नारीप्रीति नराराध्या नरनामप्रकाशिनी ।
रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ॥
रतिस्थानस्थिताराध्या रतिहर्षप्रदायिनी ।
रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी ॥
रतिराशमहोल्लासा रतिरासविहारिणी ।
रतिकान्तस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी ॥
अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता ।
रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ॥
रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा ।
मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ।
मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी ।
मद्यपानन्दसन्दात्री मद्यपप्रेमतोषिता ॥
मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी ।
मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ॥
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरापानमोहिनी ।
मदिरापानसामुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ॥
माध्वीदान सदानन्दा माध्वीपानरता मदा ।
मोदिनी मोदसन्दात्री मुदिता मोदमानसा ॥
मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी ।
मोदकादानसन्तुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥
मोदकालब्धिसङ्क्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी ।
मांसदा मांससंभक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥
मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता ।
मत्स्यमांसकृतास्वादा मकारपञ्चकान्विता ॥
मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी ।
मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥
मुद्रिकालङ्कृता माद्री मन्दराचलवासिनी ।
मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी ॥

मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी ।
मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिकामिता ॥
महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता ।
शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता ।
श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥
श्मशानभस्म भीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी ।
शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥
शमनाचारसन्तुष्टा शमनागारवासिनी ।
शमनस्वामिनी शान्तिः शान्तसज्जनपूजिता ॥
शान्तपूजापरा शान्ता शान्तागारप्रभोजिनी ।
शान्तपूज्या शान्तवन्द्या शान्तग्रहसुधारिणी ॥
शान्तरूपा शान्तियुक्ता शान्तचन्द्रप्रभाऽमला ।
अमला विमला म्लाना मालती कुञ्जवासिनी ॥
मालतीपुष्पसम्प्रीता मालतीपुष्पपूजिता ।
महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ॥
मध्यमध्वनिसम्प्रीता मध्यमध्वनिकारिणी ।
मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेमपूरिता ॥
मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता ।
महेन्द्रकृतसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ॥
महेन्द्रजालसंय्युक्ता महेन्द्रजालकारिणी ।
महेन्द्रमानिताऽमाना मानिनी गणमध्यगा ॥
मानिनीमानसम्प्रीता मानविध्वंसकारिणी ।
मानिन्याकर्षिणी मुक्ति मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा ॥
मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी ।
निर्मला मूलसंयुक्ता मूलिनी मूलमन्त्रिणी ॥
मूलमन्त्रकृताह्लाद्या मूलमन्त्राध्यहर्षिणी ।
मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री मूलमन्त्रप्रहर्षिणी ॥

मूलमन्त्रप्रसन्नास्या मूलमन्त्रप्रपूजिता ।
मूलमन्त्रप्रणेत्री च मूलमन्त्रकृतार्चना ॥
मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा ।
विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ॥
वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा ।
वटपूजा परिप्रीता वटदर्शनलालसा ॥
वटपूजा कृताह्लादा वटपूजा विवर्द्धिनी ।
वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमन्त्रिणी ॥
वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा ।
वटुका वटुकाराध्या वटुकाहारदायिनी ॥
वटुकार्च्चापरा पूज्या वटुकार्च्चा विवर्द्धिनी ।
वटुकानन्दकर्त्री च वटुकप्राणरक्षिणी ॥
वटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया ।
पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्र प्रपूजिता ॥
पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपति हर्षदा ।
पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥
पार्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी ।
पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥
पद्मजेड्यपदा पद्ममालालङ्कृतमस्तका ।
पद्मार्चितपदद्वन्दा पद्महस्ता पयोधिजा ॥
पयोधिपारगन्त्री च पाथोधिपरिकीर्तिता ।
पाथोधिपारगा पूता पल्वलाम्बुप्रतर्पिता ॥
पल्वलान्तः पयोमग्ना पवमान गतिर्गतिः ।
पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकाङ्क्षिणी ॥
पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा ।
मुण्डिनी मुण्डहन्त्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥
मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमाला विराजिता ।
महामोहा महामर्षा महामाया महाहवा ॥

मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी ।
मठिनी मठसंहन्त्री मठसम्पत्तिहारिणी ।।
महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रु विनाशिनी ।
पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णाहारविहारिणी ।।
प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी ।
प्रलयार्णवसम्मग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ।।
महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी ।
महाप्रलयसम्प्रीता महाप्रलयसाधिनी ।।
महामहाप्रलयेज्या महाप्रलयमोदिनी ।
छेदिनी छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्त्थिनी ।।
शत्रुसञ्छेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी ।
लक्षिणी लक्षसम्पूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ।।
लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षवाणप्रमोचिनी ।
लक्षपूज्यापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ।।
लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी ।
लक्षलीलालयालभ्या लक्षागारनिवासिनी ।।
लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता ।
लोकिनी लोकसम्पूज्या लोकरक्षणकारिणी ।।
लोकवन्दितपादाब्जा लोकमोहनकारिणी ।
ललिता ललितालीना लोकसंहारकारिणी ।।
लोकलीलाकरी लोक्या लोकसम्भवकारिणी ।
भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूततोषिणी ।।
भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता ।
भूतप्रेतपिशाचादि स्वामिनी भूतपूजिता ।।
डाकिनीशाकिनी डेया डिण्डिमारावकारिणी ।
डमरूवाद्यसन्तुष्टा डमरूवाद्यकारिणी ।।
हुङ्कारकारिणी होत्री हाविनी हवनार्थिनी ।
हासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ।।

अट्टाट्टहासिनी टीका टीका निर्माणकारिणी ।
टङ्किनी टङ्किता टङ्का टङ्कमात्र सुवर्णदा ।।
टङ्कारिणी टकाराढ्या शत्रुत्रोटनकारिणी ।
त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसन्देहकारिणी ।।
तर्षिणी तृट्परिक्लान्ता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता।
अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ।।
काङ्क्षिणी कुट्टनी क्रूरा कुट्टनीवेश्मवासिनी ।
कुट्टनीकोटिसम्पूज्या कुट्टनीकुलमार्गिणी ।।
कुट्टनीकुलसंरक्षा कुट्टनीकुलरक्षिणी ।
कालपाशावृता कन्या कुमारीपूजनप्रिया ।।
कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टि संयुता ।
कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी ।।
काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता ।
काकांकरथसंस्थाना काकांकस्यन्दनास्थिता ।।
काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी ।
काकमाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ।।
काकदर्शनसंशीला काकसंकीर्णमन्दिरा ।
काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्या धमावृता ।।
धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी ।
धुन्धुरा धुन्धुराकारा धूम्रलोचनघातिनी ।।
धूंकारिणी च धूम्मन्त्रपूजिता धर्मनाशिनी ।
धूम्रवर्णिनी धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ।।
धूम्बीजजपसन्तुष्टा धूंबीजजपमानसा ।
धूंबीजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी ।।
धूंबीजाकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा ।
धूलीप्रक्षेपिणी धूलीव्याप्त धम्मिल्लधारिणी ।।
धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजनिन्दकान्तका ।
धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ।।
धारास्तम्भकरी धूर्त्ता धारावारि विलासिनी ।
धांधींधूंधैं मन्त्रवर्णा धौं धः स्वाहा स्वरूपिणी ।।

धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी ।
धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्याननिवासिनी ।।
धामोद्यान पयोदात्री धामधूली प्रधूलिका ।
महाध्वनिमती धूप्या धूपामोद प्रहर्षिणी ।।
धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी ।
धीवरीगणसम्पूज्या धीवरीवरदायिनी ।।
धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी ।
धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ।।
धीवरीधनदात्री च धीवरी प्राणरक्षिणी ।
धात्रीशा धातृसम्पूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ।।
धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी ।
धूम्रपानरतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ।।
धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी ।
धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुन्धुकारीजनच्छिदा ।।
धुन्धुकारीष्ट सन्दात्री धुन्धुकारी सुमुक्तिदा ।
धुन्धुकार्याराध्यरूपा धुन्धुकारीमनस्थिता ।।
धुन्धुकारिहिताकांक्षा धुन्धुकारिहितैषिणी ।
धिन्धिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगम्याधनार्थिनी।।
धोरिणी धोरणप्रीता धारिणी धोररूपिणी ।
धरित्री रक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ।।
धराधरसुताऽशेष धराधरसमद्युतिः ।
धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्धनधान्यविवर्द्धिनी ।।
धान्याकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी ।
धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ।।
धनसंवृद्धि सम्पन्ना धनदानपरायणा ।।
धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ।
धनरक्षा धनप्राणा धनानन्दकरी सदा ।।
शत्रुहन्त्री शवारूढ़ा शत्रुसंहारकारिणी ।
शत्रुपक्षक्षितिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी ।।

शत्रुग्रीवाच्छिदाछाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ।
शत्रुप्राणहराहार्या शत्रून्मूलनकारिणी ॥
शत्रुकार्यविहन्त्री च सांगशत्रुविनाशिनी ।
सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदायिनी ॥
सांगसायुधसर्वारि सर्वसम्पत्तिनाशिनी ।
सांगसायुधसर्वारि देहगेहप्रदाहिनी ॥

फलश्रुति-

इतीदं धूमरूपिण्या स्तोत्रनाम सहस्रकम् ।
यः पठेच्छून्यभवने साध्वान्ते यत मानसः ॥
मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यान परायणः ।
तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोऽपि वै ॥
भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ।
स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं ममवक्त्राद्विनिर्गतम् ॥
पठेद्वा शृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत् ।
न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे ॥
देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तिपराय च ।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥

॥ इति धूमावती सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

धूमावती पूजा पद्धतिः

पूजागृहद्वारदेशं गत्वा "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वाराधिष्ठित गणेशादि देवताभ्यो नमः" इति सम्पूज्य, आत्मानं तेजोरूपं ध्यात्वा द्वारदेवाताज्ञां गृहीत्वा, वामाङ्ग सङ्कोचेन दक्षिण पाद पुरःसरं गृहान्तः प्रविश्य–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

इति पठित्वा 'हुं फट् स्वाहा' इति भूतानि निःसारयेत् । पूजागृहे एभिर्मन्त्रैस्तिलसर्षपाक्षतान् विकिरेत् । नैऋत्य कोणे–वास्तुपुरुषाय नमः । ईशाने त्रिकोणं कृत्वा, तत्र साधारं दीपं संस्थाप्य–'ॐ रक्तवर्ण द्वादश–शक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः' इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मशाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

इति नत्वा 'वेदिकायै नमः' पीठं सम्पूज्य, 'ॐ जय ध्वनि मन्त्र-मातः स्वाहा' घन्टां वादयेत् । 'ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण भूमिं सम्प्रोक्ष्य आसनाधः त्रिकोण मण्डलं कृत्वा, तत्र मायावीजं विलिख्य 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इति सम्पूज्य अस्त्रेण संरक्ष्य, तत्रासनमास्तीर्य आसनाधः त्रिकोणे 'गं गणपतये नमः' 'सं सरस्वत्यै नमः' वायव्ये "दुं दुर्गायै नमः", ईशाने 'क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति सम्पूज्य काकपक्षं धृत्वा आसनं स्पृष्ट्वा–

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इति सम्प्रार्थ्य,प्रांगमुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यासनेनोपविश्य, मूलेन आचम्य "ॐ मणिधारिणि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" इति शिखां बध्नीयात्। ततो देव्या दक्षिणवामपार्श्वयो घृततैलदीपं प्रज्वाल्य 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्तवर्ण द्वादशशक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः' इति पूजयित्वा–

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्वं सुस्थिरो भव ॥

इति प्रार्थयेत् । अस्त्रमन्त्रेण दिग्बंधनं कुर्यात् । अंगुष्ठतर्जनी–योगेन 'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्' इति वह्निप्राकारं विचिन्त्य आचम्य प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

संकल्पः

ॐ तत्सदद्य परमात्मनआज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक संवत्सरस्य श्री श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुक प्रदेशे अमुक स्थाने अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं श्री भगवत्याः धूमावत्याः प्रसादसिद्धिद्वारा सर्वाभीष्ट सिध्यर्थं यथा-ज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः सांगावरणैः श्री भगवती धूमावती सपर्यां करिष्ये । तथा च पूजाधिकार सिध्यर्थं शरीर शुद्ध्यर्थं च भूत-शुद्ध्यादि मूलमंत्र न्यासादिकं करिष्ये ।

ततः स्ववामभागे गुरुपादुका मन्त्रेण गुरुं, दक्षिण भागे भें भद्र-काल्यै नमः, उपरि गं गणपतये नमः, हृदि श्री धूमावत्यै नमः । सुमुख–चतुरस्र–गोक्षुर–योनिमुद्राः प्रदर्श्य, भैरवाज्ञां प्रार्थयेत् ।

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्त दहनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

स्व शिरसि सङ्घट्टमुद्रां बध्वा–

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीत्रयं मण्डलम् ॥

वीरान्द्वयष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपंचकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ।।

इति पठित्वा ऋष्यादिन्यासपूर्वकं श्रीगुरुपादुकामन्त्रं दशधा जपेत् । ततः स्वयं धूम्रक्रमेण शिवोऽहमिति भावयन् वर्द्धनी कलशं स्थापयेत् ।

वर्द्धनीकलशस्थापन

त्रिकोणवृत्तचतुरस्र मण्डलं विधाय 'ॐ मण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आधारं प्रक्षाल्य, मण्डले निधाय, 'ॐ धर्मप्रद दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः' आधारं सम्पूज्य 'ॐ अर्थप्रदद्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः' इति पात्रं सम्पूज्य, मूलेन जलमापूर्य तत्र 'क्रों' इत्यंकुशमुद्रया रात्रौ चन्द्रमण्डलात्, दिवसे सूर्यमण्डलात् तीर्थान्याबाह्य–

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

इति सम्प्रार्थ्य, 'ॐ कामप्रद षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य, 'सहस्रार हुं फट्' इति मन्त्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य, गरुडमुद्रया निर्विषीकृत्य'हुम्'इति अवगुण्ठ्य,'क्रों' इत्यंकुशमुद्रया 'ॐऐंह्रींश्रीं नमो भगवत्यशेषतीर्थालवाले शिवजटाधिरूढ़े गंगे गंगाम्बिके स्वाहा' इति पठित्वा । मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, 'व' इति धेन्वाऽमृतीकृत्य, मूल मन्त्रेण सप्तवाऽभिमन्त्र्य गन्धाक्षतैः सम्पूज्य प्रणमेत् ।

। इति वर्द्धनी कलशार्चनम् ।

भूतशुद्धि

मूलाधारस्थितां स्वेष्टदेवतारूपां विसतन्तुनिभां विद्युत्प्रभापुञ्जभासुरां कुण्डलिनीं ध्यात्वा, उत्थाय हृत्कमले साङ्गतां सुषुम्नावर्त्मना,

प्रदीपकलिकाकारां जीवकलामादाय, ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत् । "ॐ हंसः सोऽहं" इति मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोज्य तत्स्थानस्थित भूतानि प्रविलापयेत् । इति भुवं जले प्रविलापयामि जलं अग्नौ, अग्नि वायौ, वायुम् आकाशे, आकाशं अहंकारे, अहंकारं महत्तत्वे, महत्तत्वं प्रकृतौ, प्रकृतिं आत्मनि । आत्मानं च शुद्ध सच्चिदानन्दरूपोऽहमिति भावयेत् । ततः पापपुरुषं विचिन्त्य, वाम नासया 'यं' वीजेन षोडशवारमापूर्य 'रं' वीजेन चतुःषष्टि वारं कुम्भयित्वा, पुनः 'यं' वीजेन द्वात्रिंशद वारं रेचकेन भस्मीभूतं पापपुरुषं वहिर्निस्सार्य, पुनः षोडश वारं वायुमापूर्य तद् भस्म अमृतधारयाऽऽप्लाव्य, 'लं' वीजेन चतुषष्टि वारं कुंभकेन घनीकृत्य पुनः "ईं" वीजेन द्वात्रिंशदवारं रेचकेन प्राणाद् उत्पाद्य कुण्डलिनीशक्ति "सोऽहं" इति मन्त्रेण परमात्मनः सकाशाद् अमृतमय जीवमादाय–

हृत्कमले समागतां, तत्र जीवं संस्थाप्य सुषुम्णामार्गेण मूलाधारगतां चिन्तयेत् ।

। इति भूतशुद्धिः ।

आत्म प्रतिष्ठा

हृदि दक्षकरतलं निधाय–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं षं सं हं लं क्षं सोहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः ।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सोहं हंसः मम जीव इह स्थितः ।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सोहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । ततः त्रिः प्राणानायम्य ।

अन्तर्मातृकान्यासः

अस्य श्री अन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः श्री मातृका सरस्वती देवता, हलो वीजानि, स्वराः शक्तयः विन्दवः कीलकं श्री धूमावती आराधनत्वेन न्यासे विनियोगः ।

पञ्चाशदक्षरविनिर्मितदेहयष्टिं,
भालेक्षणं धृतहिमांशुकलाभिरामाम् ।
रुद्राक्षसूत्रमणिपुस्तकशोभिहस्तां,
वर्णेश्वरीं नमत कुन्दहिमांशुगौरीम् ॥

ऋष्यादिन्यासः – ब्रह्मणे नमः शिरसि
गायत्री छन्दसे नमो मुखे
श्री मातृकासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि
हलो वीजेभ्यो नमः गुह्ये
स्वरा शक्तये नमः पादयोः
विन्दवः कीलकाय नमः नाभौ
श्री धूमावती आराधनत्वेन विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यासः –

अं कं खं गं घं ङं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां वषट् ।
एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां हुं ।
ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः	करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्गन्यासः –

अं कं खं गं घं ङं आं	हृदयाय नमः ।
इं चं छं जं झं ञं ईं	शिरसे स्वाहा ।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं	शिखायै वषट् ।
एं तं थं दं धं नं ऐं	कवचाय हुं ।
ओं पं फं बं भं मं औं	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः	अस्त्राय फट् ।

वहिर्मातृकान्यासः

अस्य श्री वहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता वीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं न्यासे

विनियोगः। ऋष्यादिन्यासं पूर्ववत्कृत्वा, अकारादिक्षकारान्तमातृका-
वर्णैः स्वदेहे व्यापकन्यासं कुर्यात्।

ध्यानम्– अर्द्धोन्मुक्तशशांककोटिसदृशीमापीनतुङ्गस्तनीम्।
चन्द्रार्द्धाङ्कितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम्॥
बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः।
आद्यां यौवनगर्विता लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये॥

अं नमो ललाटे। आं नमो मुखवृत्ते।
इं नमो दक्षनेत्रे। ईं नमो वामनेत्रे।
उं नमो दक्षकर्णे। ऊं नमो वामकर्णे।
ऋं नमो दक्षनासापुटे। ॠं नमो वाम नासापुटे।
लृं नमो दक्ष गण्डे। लॄं नमो वाम गण्डे।
एं नमो ऊर्ध्वोष्ठे। ऐं नमो अधरोष्ठे।
ओं नमो ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ। औं नमो अधोदन्तपङ्क्तौ।
अं नमो ब्रह्मरन्ध्रे। अः नमो जिह्वायाम्।
कं नमो दक्ष–बाहुमूलं। खं नमो दक्ष–कूर्परे।
गं नमो दक्ष मणिबन्धे। घं नमो दक्ष करांगुलि मूले।
ङं नमो दक्ष करांगुल्यग्रे। चं नमो वाम बाहुमूले।
छं नमो वाम कूर्परे। जं नमो वाम मणिवन्धे।
झं नमो वाम करतले। ञं नमो वाम करांगुल्यग्रे।
टं नमो दक्षपादमूले। ठं नमो दक्ष जानुनि।
डं नमो दक्षपादगुल्फे। ढं नमो दक्ष पादांगुलिमूले।
णं नमो दक्षपादांगुल्यग्रे। तं नमो वाम पादमूले।
थं नमो वामजानुनि। दं नमो वामपादगुल्फे।
धं नमो वामपादांगुलिमूले। नं नमो वाम पादांगुल्यग्रे।
पं नमो दक्षपार्श्वे। फं नमो वामपार्श्वे।
बं नमो पृष्ठे। भं नमो नाभौ।
मं नमो जठरे। यं नमो हृदये।
रं नमो दक्षस्कन्धे। लं नमो वामस्कन्धे।
वं नमः ककुदि। शं नमो हृदयादि-दक्ष-कराग्रान्तं।

षं नमो हृदयादिवामकराग्रान्तं । सं नमो हृदयादि-दक्षपादान्तं ।
हं नमो हृदयादि वामपादान्तं । लं नमो मस्तकादि पादान्तम् ।
क्षं नमः पादादि शिरोन्तम् ।

मूलमन्त्रन्यासः

अस्य श्री धूमावती मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः निवृच्छन्दः धूमावती देवता धूं वीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकम् न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः – पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि ।
निवृच्छन्दसे नमो मुखे ।
धूमावती देवतायै नमः हृदि ।
धूं वीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।
धूमावती नमः नाभौ ।
कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः –
ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ तिं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यासः –
ॐ धूं धूं हृदयाय नमः ।
ॐ धूं शिरसे स्वाहा ।
ॐ मां शिखायै वषट् ।
ॐ वं कवचाय हुं ।
ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

अत्युच्चामलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना ।
रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरीचञ्चला ।।

प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षप्रभा ।
ध्येया मुक्तकचा सदा प्रियकरिर्धूमावती मंत्रिणा ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य प्रणमेत् ।

सामान्यार्घ्य स्थापनम्

त्रिकोण–षट्कोण–वृत्त–अष्टदल–चतुर्द्वारात्मकं यन्त्रं स्थापयेत् । यन्त्रात्मनोर्मध्ये हस्तपरिमितेऽन्तराले पात्रासादनं कुर्यात् । स्व वामभागे त्रिकोण–षट्कोण–वृत्त–चतुरस्रं कृत्वा शङ्खमुद्रया दक्षांगुष्ठेन स्पृशेत् । तत्र मण्डले अग्नीसासुरवायव्यकोणेषुमध्येचतुर्दिक्षु च षडंगमन्त्रैः पूजयित्वा । तद्यथा–

ह्रां हृदयदेवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं शिरोदेवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रूं शिखादेवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रैं कवचदेवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रौं नेत्रदेवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रः अस्त्रदेवी श्री पादुकां पूजयामि ।

शङ्खाधारं मण्डले स्थापयेत् । तत्राग्निकलाः यजेत्–

'ॐ ऐं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने सामान्यार्घ्य पात्राधाराय नमः' । इति आधारं सम्पूज्य, तत्र–ऐं ह्रीं श्रीं यं धूमार्चिषे नमः, रं उष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, ळं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः ।

ततः – ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ।

इति शङ्खं प्रक्षाल्य, आधारोपरि संस्थाप्य, 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रद द्वादश कलात्मने सामान्यार्घ्यपात्राय नमः । इति शङ्खं सम्पूज्य–

कं भं तपिन्यै नमः, खं वं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सषुम्णायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं वोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः, इति द्वादश-कला: सम्पूज्य –

ततः वर्धनीजलेन शङ्खमापूर्य, तत्र 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोम मण्डलाय नमः' इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य, ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः, ऌं चन्द्रिकायै नमः, ॡं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः।

इति षोडशकला: पूजयेत् ।

तत्र हेतुलवं प्रक्षिप्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य, मत्स्य-मुद्रयाऽऽच्छाद्य, मूलं त्रिः जपेत् । 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः' इति मन्त्रेण शङ्खोदकेन् आत्मानं पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत् । तदर्घ्यात किञ्चिद वर्द्धन्यां क्षिपेत् ।

। इति सामान्यार्घ्य विधिः ।

अथ विशेषार्घ्य स्थापनम्

देवीचक्रात्मनोर्मध्ये जलेन स्थलं सम्प्रोक्ष्य, तत्र त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त–चतुरास्रकं मण्डलं विधाय, खण्डत्रयेण, मूलेन, त्रिकोणेषु, मध्ये, पूजयेत् ।

"धूं धूं धूमावति स्वाहा" इति मूल मन्त्रः ।

ह्रां हृदय देवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं शिरो देवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रूं शिखा देवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रैं कवच देवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रौं नेत्र देवी श्री पादुकां पूजयामि ।
ह्रः अस्त्र देवी श्री पादुकां पूजयामि ।

इति सम्पूज्य, चतुरस्त्रे–

कामरूपपीठाय नमः ।
जालन्धरपीठाय नमः ।
पूर्णगिरिपीठाय नमः ।
ओड्यानपीठाय नमः ।

इति पीठचतुष्टयं पूजयेत् । तत्र अस्त्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य, "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रद दशकलात्मने विशेषार्घ्य पात्राधाराय नमः", इति सम्पूज्य, यं धूमार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः । इति दशाग्नि कलाः पूजयेत् ।

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रददशकलात्मने विशेषार्घ्य-पात्राय नमः' । इति अस्त्रक्षालितं पात्रं संस्थाप्य, सम्पूज्य–

कं भं तपिन्यै नमः ।
खं वं तापिन्यै नमः ।
गं फं धूम्रायै नमः ।
घं पं मरीच्यै नमः ।
ङं नं ज्वालिन्यै नमः ।
चं धं रुच्यै नमः ।
छं दं सुषम्णायै नमः ।
जं थं भोगदायै नमः ।
झं तं विश्वायै नमः ।
ञं णं बोधिन्यै नमः ।
टं ढं धारिण्यै नमः ।
ठं डं क्षमायै नमः ।

इति द्वादश सूर्यकलाः तस्मिन् पूजयेत् ।

ततो विलोम मातृकया मूलेन च क्षीरमापूर्य, तत्र मूलकशकला-न्यार्द्रकखण्डांश्च संमिश्र्य–

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं धूं धूं धूमावति स्वाहा।

'ऐं ह्रीं श्रीं सौं सोममण्डलाय कामप्रद षोडशकलात्मनेविशेषार्घ्य पात्रामृताय नमः'। इति सम्पूज्य, तत्र अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः, ऌं चन्द्रिकायै नमः, ॡं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः। इति षोडषसोमकलाः पूजयेत्।

ततः त्रिकोणं विलिख्य पश्चिमकोणादारभ्य अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः पर्यन्तं, ईशानादारभ्य–कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं पर्यन्तम्, अग्निकोणादारभ्य–थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं पर्यन्तम्, कोणेषु–हं लं क्षं, मध्ये ईं, द्वयोपार्श्वयोः हंसः' इति विलिख्य, पंचरत्नानि पूजयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लूं गगनरत्नाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्लूं पातालरत्नाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं न्लूं नागरत्नाय नमः।

इति पञ्चरत्नकं सम्पूज्य, ततो मध्ये त्रिकोण–षटकोण–वृत्त–अष्टार–चतुरस्रं विभावयेत्। चतुरस्रे आनन्दभैरवानन्दभैरव्यौ पूजयेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय वषट्
आनन्दभैरव श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं स ह क्ष म ल व र यीं सुधादेव्यै वौषट्,
आनन्दभैरवी सुधादेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ततः त्रिकोणे कूटत्रयेण, मध्ये च मूलेन सम्पूज्य, षट्कोणे षडङ्गानि पूजयेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निचक्रे ब्रह्मात्मक शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यचक्रे विष्णवात्मक शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोमचक्रे रुद्रात्मक शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं हृदय देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं शिरो देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं शिखा देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं कवच देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं नेत्र देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्र देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

अष्टारे –

ऐं ह्रीं श्रीं अं असिताङ्ग भैरव सहित–
आं ब्राह्मीदेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं इं रुरु भैरव सहित–
ईं माहेश्वरी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं उं चण्ड भैरव सहित–
ऊं कौमारी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऋं क्रोध भैरव सहित –
ॠं वैष्णवी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं लृं उन्मत्त भैरव सहित–
ॡं बाराही देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं भीषण भैरव सहित–
औं चामुण्डा देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं संहार भैरव सहित–
अः महालक्ष्मी देवी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

दशब्रह्म कलाः

कं सृष्टि कलायै नमः । खं ऋद्धि कलायै नमः ।
गं स्मृति कलायै नमः । घं मेधा कलायै नमः ।

ङं कान्ति कलायै नमः।
चं लक्ष्मी कलायै नमः।
छं द्युति कलायै नमः।
जं स्थिरा कलायै नमः।
झं स्थिति कलायै नमः।
ञं सिद्धि कलायै नमः।

दश विष्णुकलाः

टं जरा कलायै नमः।
ठं पालिनी कलायै नमः।
डं शान्ति कलायै नमः।
ढं ईश्वरी कलायै नमः।
णं रति कलायै नमः।
तं कामिनी कलायै नमः।
थं वरदा कलायै नमः।
दं आह्लादिनी कलायै नमः।
धं प्रीति कलायै नमः।
नं दीर्घा कलायै नमः।

दश रुद्रकलाः

पं तीक्ष्णा कलायै नमः।
फं रौद्रा कलायै नमः।
बं भया कलायै नमः।
भं निद्रा कलायै नमः।
मं तन्द्री कलायै नमः।
यं क्षुत् कलायै नमः।
रं क्रोधिनी कलायै नमः।
लं क्रिया कलायै नमः।
वं उद्गारि कलायै नमः।
शं मृत्यु कलायै नमः।

चतस्रः ईश्वरकलाः

षं पीता कलायै नमः।
सं श्वेता कलायै नमः।
हं अरुणा कलायै नमः।
ळं असिता कलायै नमः।

षोडश सदाशिवकलाः

अं निवृति कलायै नमः।
आं प्रतिष्ठा कलायै नमः।
इं विद्या कलायै नमः।
ईं शान्ति कलायै नमः।
उं इन्धिका कलायै नमः।
ऊं दीपिका कलायै नमः।
ऋं रेचिका कलायै नमः।
ॠं सूक्ष्मा कलायै नमः।
लृं परा कलायै नमः।
ॡं सूक्ष्मा कलायै नमः।
एं सूक्ष्मामृता कलायै नमः।
ऐं ज्ञाना कलायै नमः।
ओं ज्ञानामृता कलायै नमः।
औं आप्यायिनी कलायै नमः।
अं व्यापिनी कलायै नमः।
अः व्योमरूपा कलायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद् होता वेदिषद् अतिथिर्दुरोणषद् नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद् अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ब्रह्मदश कलाः श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः स बुध्न्या उपमाअस्यविष्ठा:सतश्च योनिमसतश्च वि वः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं विष्णुदशकलाः श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ प्रतद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं रुद्रदशकलाः श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विन्द्वीश्वर पञ्चकला श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यंत-परमं पदम् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विन्दुनाद सदाशिव षोडशकलाः श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।

आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु मे ।
मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्तोषधीः ।
गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वती ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ।

"श्री धूमावति कलायै नमः" । इति सम्पूज्य–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हां हंसः हां विशेषाघ्यांऽमृतस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं

हं लं क्षं ह्रां हंसः ह्रां विशेषार्घ्याऽमृतस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ह्रां हंसः ह्रां विशेषार्घ्याऽमृतस्य सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ह्रीं ॐ हंसः। इति त्रिः। एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं।

इति मातृकावर्णेन अनुलोमेन त्रिरावृत्य–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके॥
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अकुलस्थाऽमृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥
ऐं ह्रीं श्रीं सौः त्वद्रूपिण्यै करस्यं त्वं कृत्वा ह्येतद् स्वरूपिणि।
भूत्वापराऽमृताकारा मयि विस्फुरणं कुरु॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्लूं ह्सौः जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि-अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा। इति मन्त्रं पठेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लिन्ने क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौं मोक्षं कुरु कुरु ह्सौ। इति दीपिनी मन्त्रं अष्टवारं जपेत्। ततो मूलं नववारं पठेत्। धेन्वामृतीकृत्य महायोनिमुद्रया अस्त्रेण संरक्ष्य, कवचेन अवगुण्ठय, धेनुयोनिं प्रदर्शयेत्। 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः स्वाहा'। इति विशेषार्घ्यामृतं देवी रूपं विभाव्य, 'श्री धूमावत्यै नमः', गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यान्तं सम्पूज्य प्रणमेत्।

आत्म पात्र स्थापनम्

तत्रादौ स्वशिरसि 'श्रीं ह्रीं क्लीं' इत्यनेन गन्धाक्षतपुष्पैः गुरु-पादुकां सम्पूज्य, स्वपुरतः त्रिकोण–वृत्त–चतुरस्र मण्डलं कृत्वा, 'ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा' इति मन्त्रेण आत्मपात्रश्रीपात्रयोर्मध्ये साधारं पात्रं संस्थाप्य, सुधयाऽऽपूर्य, ततः स्वशिरसि–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धौघ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मानवौघ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वगुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमगुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठिगुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

हृदये–'धूं धूं धूमावति स्वाहा' धूमावती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
मूलाधारे–'वक्रतुण्डाय हुं' वक्रतुण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा । त्रिः सन्तर्प्य ।

'आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माऽहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माऽहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा' ।

इति मन्त्रेण 'आत्मा मे शुद्ध्यताम्' इति मन्त्रान्ते स्वीकृत्य, तत्व चतुष्टयेन आनन्दमयो भूत्वा, देवीं यजेत् ।

किंचिन मूलमन्त्रं प्रजप्य, हस्ते पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य 'श्री धूमावतीं पूजयामि नमः' इति पुष्पाञ्जलिं समर्प्य, यन्त्रराजमध्ये ध्यानोक्तां देवीं विचिन्त्य, पीठ पूजां कुर्यात् ।

ॐ मं मण्डूकादिपरतत्वांत पीठ देवताभ्यो नमः ।

ॐ कामदायै नमः ।
ॐ मानदायै नमः ।
ॐ नक्तायै नमः ।
ॐ मधुरायै नमः ।
ॐ मधुराननायै नमः ।
ॐ नर्मदायै नमः ।
ॐ भोगदायै नमः ।
ॐ नंदायै नमः ।
मध्ये– ॐ प्राणदायै नमः ।

पीठ पूजां कृत्वा पुष्पैः सम्पूज्य यन्त्रराजे मूर्ति कल्पयित्वा, त्रिखण्डया मुद्रया पुष्पाण्यादाय मूलं पठित्वा–

अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना ।
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चञ्चला ॥
प्रस्वेदांबुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरुक्षप्रभा ।
ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकरिर्धूमावतीमंत्रिणा ॥

इति ध्यात्वा, स्वहृदयकमले परशिवेनैक्यं विभाव्य, वहन्नासा-द्वारेण स्वान्तस्थतेजः अञ्चलौ आनीय–

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥

"धूं धूं धूमावती स्वाहा" सः ह्रीं भगवति आगच्छ आगच्छ अस्मिन्मण्डले सान्निध्यं कुरु कुरु मम सुप्रसन्नं कुरु कुरु स्वाहा ॥ मन्त्रेण चक्रेण मध्य विन्दौ आवाह्य, पुष्पाणि समर्प्य, चिन्तयेत् । तत्र विन्दुमध्य निवासिनीं देवीं आवाहनादि स्थापनादिमुद्राः सम्यक् प्रदर्शयेत् तद्यथा–

आवाहिता भव ।
संस्थापिता भव ।
सन्निधापिता भव ।
सन्निरुद्धा भव ।
सन्मुखी भव ।
अवगुण्ठिता भव ।]

वन्दन, धेनु, योनि, मत्स्य मुद्रः प्रदर्शयेत् ।

प्राणप्रतिष्ठा

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री धूमावत्याः प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री धूमावत्याः जीव इह स्थितः ।

ॐ ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः ह्रीं ॐ हंसः

श्री धूमावत्याः यन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणादीनि इहैवागत्य अस्मिश्चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ॐ असुनीते पुनरस्मासुचक्षु पुनः प्राणमिह नो देहि भोगम्। जोक्पश्चेम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मूलयानस्स्वति।

आवाहन–

ॐ आगच्छेह महादेवि सर्वशत्रु विनासिनी।
यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधा भव ॥
मूलं भगवति धूमावत्यै नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसन–

प्रसीद जगतांमातः संसारार्णव तारिणी।
मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु ॥
मूलं धूमावत्यै नमः। आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्य– गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः। पाद्यार्थं जलं समर्पयामि।

अर्घ्य– निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यंगुणाह्यसि।
काकोपरिस्थिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।
मूलं धूमावत्यै नमः। हस्ते अर्घ्यं समर्पयामि ॥

आचमन– कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवित्वं प्रतिगृह्यताम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः। मुख प्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

मलापकर्षण स्नान–

मंदाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोरुहवासितम्।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥
मूलं धूमावत्यै नमः। स्नानार्थे जलं समर्पयामि ॥

मधुपर्क–

दधिमधुघृतसमायुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भव शोभने ॥
मूलं धूमावत्यै नमः। मधुपर्कं समर्पयामि ॥

आचमन-

उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रत: ।
शुद्धिमाप्नोति तस्यैते पुनराचमनीयकम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । मुख:प्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि ।।

सुगन्धित तैल-

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे ।
सर्व लोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । सुगन्धित तैलाभ्यंगं समर्पयामि ।।

दुग्ध स्नान-

कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पय: स्नानार्थमर्पितम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । पयस्नानं समर्पयामि ।।

दधिस्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयादेवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । दधिस्नानं समर्पयामि ।।

घृत स्नान-

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । स्नानार्थे घृतं समर्पयामि ।।

मधु स्नान-

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः ।
तेज: पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । मधुस्नानं समर्पयामि ।।

शर्करास्नान-

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
मूलं धूमावत्यै नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि ।।

पञ्चामृत स्नान–

पयोदधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥

शुद्ध स्नान–

मंदाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोरुहवासितम् ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

अक्षत–

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान् ।
गृहाणेमान् महादेवि देहि मे निर्मलं धियम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्पमाला–

पद्मशंखज पुष्पादि शतपत्रै विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि ते धूमावति शिवे ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । पुष्पमालां समर्पयामि ॥

पुष्प–

मन्दारपारिजातादि पाटलकेतकानि च ।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । धत्तूर पुष्पं समर्पयामि ॥

धूप–

वनस्पतिरसोभूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । गुग्गुल धूपं आघ्रापयामि ॥

दीपक–

आज्यं च वर्त्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥
मूलं धूमावत्यै नमः । दीपं दर्शयामि ॥

नैवेद्यम्–

आधारोपरि देवी पुरतः नैवेद्यं संस्थाप्य, मूलेन सम्प्रेक्ष्य, सम्पूज्य, मूलेन अभिमन्त्र्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य, वामाङ्गुष्ठेन पात्रं स्पृशन् दक्षिणेन जलमादाय–

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥

इति पठित्वा 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इति देव्यै जलमर्पयेत् । वामकरे पद्ममुद्रां वध्वा, दक्षिणकरेण प्राणादि पञ्चमुद्राभिरर्पयेत् । यथा–प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा ।

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद् ।
दिव्याकल्पै ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः ॥

नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान् ।
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री ॥

इति पठित्वा किञ्चिन्मूलं प्रजप्य मध्ये पानीयं दत्त्वा, पुनः क्षणं विलम्ब्य, "अमृताऽपिधानमसि स्वाहा" इति जलं दत्वा– ततः हस्त प्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, गण्डूषान् कारयित्वा आरातिकं कुर्यात् ।

अथाऽऽवरणपूजनम्

पुष्पाञ्जलिमादाय–

संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे ॥

भूपुरे पूर्वादिक्रमेण–

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रं अग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मं यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षं निऋतये नमः निऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ यं वायवे नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सं सोमाय नमः सोम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ यं अनन्ताय नमः अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पूर्वादि क्रमेण इन्द्रादि दिक्पाल समीपे स्व-स्वायुधान् पूजयेत् ।

ॐ वज्राय नमः वज्रं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शक्तये नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दण्डाय नमः दण्डं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ खड्गाय नमः खड्गं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पाशाय नमः पाशं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ अंकुशाय नमः अंकुशं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ गदायै नमः गदां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पद्माय नमः पद्मं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ चक्राय नमः चक्रं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ततः पङ्क्त्याकारेणोपविष्ठान् दिव्यौघादि गुरून् नत्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा–

ॐ परमशिवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पराशक्त्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ पराधिनन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कुलेश्वरानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ शुक्लादेव्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कामेश्वरानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ कामेश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

सिद्धौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः ।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा–

ॐ भोगानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ क्लिन्नानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ समयानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ सहजानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

मानवौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः ।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा–

ॐ गगनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ विश्वानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ विमलानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ भुवनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मदनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ लीलानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ स्वात्मानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ प्रियानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ततः परमेष्ठिगुरुं परमगुरुं स्व गुरुं च तर्पयेत् । ततः–

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

ततो अष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राची क्रमेण–

ॐ क्षुधायै नमः क्षुधा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ तृष्णायै नमः तृष्णा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रत्यै नमः रति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ निद्रायै नमः निद्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ निर्ऋत्यै नमः निर्ऋति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ दुर्गत्यै नमः दुर्गति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ रुषायै नमः रुषा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ अक्षमायै नमः अक्षमा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

षट्कोण केशरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षुमध्ये दिक्षु च षडङ्गानि-पूजयेत् । तद्यथा–

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः हृदय देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ धूं शिरसे स्वाहा शिरो देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ मां शिखायै वषट् शिखा देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ वं कवचाय हुं कवच देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्र देवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ततो मध्ये देव्यग्रे -विन्दौ–

'धूं धूं धूमावति स्वाहा' । इति त्रिवारं सन्तर्प्य–

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति आवरण पूजनम्

ततो पुष्प धूप दीप सोपस्करं महानैवेद्यम् पूर्ववत् आधारोपरि देव्यग्रे निधाय पूर्ववत् सम्पूज्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य "अमृतोपस्तरण-मसि स्वाहा" इति विशेषार्घ्यजलं दत्वा–

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥

'नैवेद्यं समर्पयामि' प्राणादिपञ्चमुद्राभिरर्पयेत् । प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा ।

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद् ।
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः ॥

नर्मक्रीडा प्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान् ।
भुङक्तेपात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री ।।

किंचिन्मूलं प्रजप्य, मध्ये पानीयं दत्त्वा, पुनः क्षणं विलम्बय, 'अमृतापिधानमसि स्वाहा' इति जलं दद्यात् ।

ततः हस्तप्रक्षालनं । गण्डूषान् कारयित्वा पादुकां मूलेन अर्पयेत् ।

ततो बलिदानम् । ईशान कोणेषु बटुक बलिं दद्यात्–

एहि एहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, वटुकाय एष वलिर्न मम ।

ततः कवच स्तोत्रादि जपं च कुर्यात्, समर्प्य प्रधानबलिः–

ततः सिन्दूरेण बिन्दु त्रिकोण चतुरस्र मण्डलं कृत्वा बलिद्रव्यं निधाय पूजयेत् "धूं धूं धूं धुर धुर धूमावति क्रों स्वाहा फट्' मन्त्रेण बलिं दद्यात्, प्रार्थयेत्–भो धूमावति सर्वेश्वरि इमं बलिं गृहीत्वा मां मां अनुगृहाण" ।

ततः आरार्तिक्यं कुर्यात्–

अन्तस्तेजो वहिस्तेजो एकीकृत्य निरन्तरम् ।
त्रिधा देव्युपरिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ।।

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुष्पाञ्जलि–

नानाविधानि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ।।

प्रदक्षिणा–

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे ।।

ततः उद्वासनं कुर्यात् सामान्यार्घ्य पात्रमृद्धृत्य देव्युपरि भ्रामयित्वा—

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परम् ।।

इति पठित्वा 'इतः पूर्वं मां मदीयञ्च श्री धूमावती देवतायै समर्पयामि नमः' । ततः अवशिष्ट सामान्यार्घ्य जलेन स्वशिरसि सम्मार्ज्य, सामयिकान् सम्प्रोक्ष्य, देव्युपरितनं पुष्पं संहारमुद्रया गृहीत्वा, स्वयमाघ्राय, देवी चैतन्यं स्वहृदि स्थापयित्वा, मानसैः सम्पूज्य, हस्ताभ्यामर्घ्यपात्रमादाय स्वशिरसि धृत्वा—

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ।।

इति सम्प्रार्थ्य, पुष्पाक्षतान् निक्षिपेत् ।

।। इति धूमावती पूजापद्धतिः समाप्ता ।।

श्री धूमावती गायत्री मंत्र

"ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि । तन्नो धूमा प्रचोदयात्" ।। इति मन्त्रः ।

हृदयादि षडङ्गन्यासः—

ॐ धूमावत्यै च हृदयाय नमः ।
ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।
ॐ संहारिण्यै च शिखायै वषट् ।
ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।
ॐ तन्नो धूमा नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।

इति हृदयादि षडंगन्यासः । एवमेव करन्यासं च कुर्यात् ।।

।। इति धूमावती गायत्री मंत्रः ।।

धूमावती कवचम्

धूमावती मुखं पातु धूं धूं स्वाहास्वरूपिणी ।
ललाटे विजया पातु मालिनी नित्यसुन्दरी ॥
कल्याणी हृदयं पातु हसरीं नाभिदेशके ।
सर्वांगं, पातु देवेशि निष्कला भगमालिनी ॥
सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
सौभाग्यमतुलं प्राप्य चान्ते देवीपुरं व्रजेत् ॥

॥ इति धूमावती कवचम् ॥

धूमावती स्तवः

भद्रकाली महाकाली डमरूवाद्यकारिणी ।
स्फारितनयना चैव टकटंकितहासिनी ॥
धूमावती जगत्कर्त्री शूर्पहस्ता तथैव च ॥
अष्टनामात्मकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥

॥ इति धूमावती स्तवः ॥

अथ धूमावत्या धूमक्रमः

देव्युवाच –

देवेश श्रोतुमिच्छामि धूमावत्याः क्रमं शिवः ।

शिव उवाच –

धूमावत्याः क्रमो देवि कथ्यते शृणु पार्वति ।
भ्रू मध्ये कज्जलं देवि भस्मबिन्दुस्तदन्तरे ।।
मृत्त्रिपुण्ड्रं ललाटे स्याच्छवभस्म तदन्तरे ।
कृष्णवस्त्राम्बरधरः कृष्णगन्ध विभूषितः ।।
धूमावस्थाम्बरधरो धत्तूरमाल्यभूषितः ।
गन्धपुष्पेण संयुक्तः श्मशानासनसङ्गतः ।।
धूम्रवर्णं जगत्सर्वं मन्त्री धूम्रमयो भवेत् ।
काकपिच्छं चासनं स्यात् कृष्णद्रव्यं प्रधारयेत् ।।
ब्रह्मचारी मिताहारी निर्विकल्पो जितेन्द्रियः ।
सत्यवादी दृढाचारो भूशायी कुशविष्टरः ।।
स्नानं त्रिषवणं कुर्यादुच्चाटनपरायणः ।
स्वचित्तं काकवत् कृत्वा जगदुच्चाटयेद् ध्रुवम् ।।
इत्याचारपरो भूयाद् धूम्रक्रमगतो भवेत् ।
काक क्रमस्तु गदितः किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।।

।। इति धूम्रक्रमः ।।

धूमावती प्रशस्तपुष्पम्

रक्तपुष्पैर्विशेषेण सन्तुष्टा भुवनेश्वरी ।
तथैव छिन्नमस्तापि पीतैस्तु बगलामुखी ।।
गुञ्जयातु विशेषेण मातङ्गी वरदा भवेत् ।
श्मशानधत्तुरेणैव तुष्टा धूमावती परा ।।
(एव शब्द प्राशस्त्यपरो न त्वन्ययोगव्यवच्छेदकः) ।
श्रीविद्योदित पुष्पैस्तु सर्वाविद्याः प्रपूजयेत् ।।

अथ धूमावत्या गायत्री

धूमिति बीजमुच्चार्य धूमावतीति विद्महे ।
विवर्णा देवीपदतो धीमति पदमुद्धरेत् ॥
धूमा देव्यास्तु गायत्री तन्नो घोरे प्रचोदयात् ॥

अथ धूमावती विद्या

(महाथर्वण संहितायाम्) उत्तराम्नाये –

दान्तौ सवामकर्णेन्दु धूमावत्यग्निगेहिनी ।
अष्टाक्षरी महाविद्या भजतां सर्वसिद्धिदा ॥

(मेरुतन्त्रे)

पिप्पलादो मुनिश्छन्दो निवृज्जेष्ठास्य देवता ।
षड्दीर्घबिन्दुयुक्तेन धकारेण षडङ्गकम् ॥
आद्यबीजद्वयान्तस्थैः षडवर्णैर्न्यासमाचरेत् ।
अङ्गुष्ठादौ षडङ्गेषु पुनर्देवीं विचिन्तयेत् ॥

ध्यानं यथा –

विवर्णा चञ्चला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला दीर्घा विधवा विरलद्विजा ॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षी धूतहस्ता त्वरान्विता ॥
प्रवृद्धरोमा तु भृशं जटिलं कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं सदा कलहतत्परा ॥
एवं विधां सदा ध्यायेत् ततः कर्म समाचरेत् ।

अस्या पुरश्चरणम् –

जपेत् कृष्णचतुर्दश्यां शून्यागारे दिवानिशि ।
उपवासपरश्चैवमेकाहात् सिद्धिमाप्नुयात् ॥
यद्वा श्मशाने विपिने जपेल्लक्षं तु वाग्यतः ।
सोष्णीष आर्द्रवासाश्च तेन मन्त्रः प्रसिद्ध्यति ॥

होमश्चात्र घृतनैव तर्पणादि ततश्चरेत् ।
अथवा प्रजपेल्लक्षं श्मशाने विगताम्बर: ॥
निशाभोजी दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ।

मन्त्रान्तरं तन्त्रान्तरे (उत्तराम्नाये) ।

धू बीज त्रितयं प्रोच्य धुग्ययुग्मं समुच्चरेत् ।
धूमावती पदं प्रोच्य क्रौं स्वाहा फट् समन्विता ॥
मन्त्र: प्राथमिक: प्रोक्तो द्वितीयं शृणु सादरम् ।
प्रणवं धूम्रबीजं च धूमावती पदं वदेत् ॥
देवदत्तो धावतीति स्वाहान्तो मनुराडयम् ।
ऋषि: क्षपणक: ख्यातो गायत्री छन्द ईरितम् ॥
धूमावती देवता च धूं बीजं बीजमीरितम् ।
स्वाहा शक्ति: समुच्चाटे विनियोग: प्रकीर्त्तित: ॥
धाँषट्कैस्तु षडङ्गानि ध्यानं शृणु वरानने ।
काकारूढातिकृष्णाभा भिन्नदन्ता विरागिणी ॥
मुक्तकेशी सुधूम्राक्षी क्षुत्तृषार्त्ता स्यातुरा ।
चञ्चला चातिकामार्त्ता क्लिष्टा पुष्टा पिशङ्गिका ॥
मलिना श्रमिणी रक्ता व्यक्तगंधा विरोधिनी ।
धृतशूर्पाग्रहस्ता च ध्येया धूमावती परा ॥

पुरश्चरणमाह –

लक्षं जपेन्महेशानि जगदुच्चाटनं चरेत् ।

अथाघोरमन्त्र: (शारदायाम्) उत्तराम्नाये ।
विकराल भैरवनामाञ्जरम् ।

अथाभिधास्ये विधिवदघोरास्त्रमनूत्तमम् ।
यस्य संस्मरणादेव सर्वे नश्यन्त्युपद्रवा: ॥
हुमन्त: स्तम्भने मन्त्र: क्रोमाकृष्टौ समासने ।
वषडन्त: संवरणे नमोऽन्तो विषमासने ॥
ग्रहचौररिपुध्वंसे हुँ क्रोमन्तो विधीयते ।
शक्तान्तश्चाखिलेष्टास्यै क्षौमन्तो मारणे भवेत् ॥
फडन्तो भूत संहारे मन्त्रोऽयं कल्पपादप: ।

ईश्वरकल्पे तु प्रस्फुरद्वयं बन्धद्वयं च। अयं एकचत्वारिंश-
दक्षर उद्धृतः। (पदार्थादर्शटीकायाम्)

माया स्फुरद्वयं भूयः प्रस्फुरद्वितयं ततः।
घोरघोरतरेत्यन्ते तनुरूपपदं पुनः॥
चटयुग्मं तदन्ते स्यात् प्रचटद्वितयं ततः।
कहयुग्मं वमद्वन्द्वं * ततो बन्धयुगं पुनः॥
घातयद्वितयं वर्म फडन्तः समुदाहृतः।
एवं पञ्चाशदर्णोऽयमघोरास्त्रमहामनुः॥
अघोराऽस्य मुनिः प्रोक्तश्छन्दस्त्रिष्टुबुदाहृतम्।
अघोररुद्रः संदिष्टो देवता मन्त्रवित्तमैः॥
हृदयं पञ्चभिः प्रोक्तं शिरः षड्भिरुदाहृतम्।
शिखा दशभिराख्याता तावद्भिः कवचं मतम्॥
वसुवर्णैः स्मृतं नेत्रार्णैरस्त्रमीरितम्।

ध्यानम् –

सजलघनसमाभं भीमदंष्ट्रं त्रिनेत्रं
भुजगधरमघोरं रक्तवस्त्राङ्गरागम्।
परशुडमरुखड्गाखेटकं बाणचापौ
त्रिशिखनरकपाले बिभ्रतं भावयामि॥

अथास्य पुरश्चरणं तत्रैव –

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं घृतसिक्तैस्तिलैः शुभैः।
तद्दशांशं प्रजुहुयान्मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये॥

। इति धूमावतीप्रकरणम्।

मोक्षप्रदा श्री धूमावती का मन्त्र

'सात्वतत्रितयंसार्धितत्राद्यौ चन्द्रशेखरौ।
वैकुण्ठोऽनन्तसंयुक्तो जलं नेत्रयुतो हरिः॥
अष्टार्णो वह्निजायान्तो मन्त्रः शत्रुविनाशनः।'

---

* वहयुग्मं वदद्वन्द्वम् इति २ पु. पा.

साधिसात्वत चय (धू धू धू) इनमें से प्रारम्भ के दोनों चन्द्रशेखर (धँ धँ धू), फिर अनन्त संयुक्त वैकुण्ठ (मा) जल (व) नेत्रयुत हरि (ति) तथा अन्त में वह्निजाया (स्वाहा) लगाने से अष्टाक्षर मन्त्र बनता है।

मन्त्रोद्धार – 'धूं धूं धूमावति स्वाहा'।

पिप्पलादोनिचृज्ज्येष्ठामुनिश्छन्दोऽस्य देवता।
आद्यबीजद्वयांतस्थैः षडवर्णेरंगमीरितम्।
श्मशाने संस्थितां ध्यायेज्ज्येष्ठां वायससंस्थिताम्॥

विनियोग एवं न्यास –

इस मन्त्र के पिप्पलाद ऋषि हैं, निचृद् छन्द है तथा ज्येष्ठा देवता है। प्रारम्भ के दोनों बीजों से षडङ्गन्यास करना चाहिए फिर श्मशान में वायस पर विराजमान ज्येष्ठा देवी का ध्यान करना चाहिए।

विनियोग – अस्य धूमावती मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः, निचृच्छन्दो, जेष्ठा देवता, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

न्यास – धँ धँ हृदयाय नमः। धँ धँ कवचाय हुँ।
धँ धँ शिरसे स्वाहा। धँ धँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
धँ धँ शिखायै वषट्। धँ धँ अस्त्राय फट्।

अथवा

धां	अंगुष्ठाभ्यां नमः ।	धां	हृदयाय नमः ।
धीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा ।	धीं	शिरसे स्वाहा ।
धँ	मध्यमाभ्यां वषट् ।	धूं	शिखायै वषट् ।
धैं	अनामिकाभ्यां हुँ ।	धैं	कवचाय हुँ ।
धौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।	धौं	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
धः	करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।	धः	अस्त्राय फट् ।

वर्णन्यास –

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः हृदि।
एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः दक्षबाहौ।

ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः वाम बाहौ ।
णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः दक्ष पादे ।
मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमः वाम पादे ।

ध्यान –

अत्युच्चमलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहादुर्मना
रूक्षाक्षित्रितयाविशालदशना सूर्योदरी चञ्चला ।
प्रस्वेदांबुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षप्रभा
ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मन्त्रिणा ॥

अत्यन्त लम्बी, मैले-कुचैले वस्त्र धारण करने वाली, सब लोगों को उद्वेग देने वाली, खिन्न मनवाली, रूखी-रूखी तीन आँखों वाली, बड़े-बड़े दाँतों वाली, सूर्य के समान उदरवाली, चञ्चल चित्तवाली, पसीने से आर्द्र शरीर वाली, भूख से व्याकुल, कृष्णवर्ण वाली, रूखे शरीर वाली, खुले केशवाली एवं कलहप्रिया धूमावती का साधक को ध्यान करना चाहिए ।

जपसंख्या एवं हवन –

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं श्मशाने विगताम्बर ।
निशाभोजी दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ॥

ऐसा ध्यान कर श्मशान में निवस्त्र होकर केवल रात्रि में भोजन करते हुए एक लाख जप करना चाहिए । फिर तिलों से दशांश हवन करना चाहिए ।

मुमुक्षुओं के लिए रहस्यार्थ –

ऐसा ध्यान कर निर्जन स्थान पर एकान्त में दत्तचित्त होकर रात्रि जागरण करते हुए एक लाख जप करना चाहिए । फिर जप संख्या का दशांश और जप करना चाहिए । (यहाँ रात्रिभोजी का अर्थ रात्रि का आहार करने वाला है) ।

पूजाविधि –

पूर्वोक्ते पूजयेत्पीठे ज्येष्ठां शत्रुविनष्टये ।
केसरेषु षडंगानि पत्रस्था अष्टशक्तयः ॥

क्षुधातृष्णारतिर्निद्रानिर्ऋति दुर्गतीरुषा ।
अक्षमेति ततोदेवा इन्द्राद्या आयुधानि च ।।
एवं ज्येष्ठां समाराध्य सिद्धमन्त्र प्रजायते ।

शत्रु का नाश करने के लिए पूर्वोक्त पीठ पर ज्येष्ठा का पूजन करना चाहिए । केसरों में षडङ्गपूजा तथा मन्त्रों में आठ शक्तियों का पूजन करना चाहिए । क्षुधा, तृष्णा, रति, निद्रा, निर्ऋति, दुर्गति, रुषा एवं अक्षमा (ये आठ शक्तियाँ हैं) फिर इन्द्र आदि दिक्पालों एवं उनके आयुधों का पूजन करना चाहिए ।

प्रयोग विधि –

उपोष्य कृष्ण भूताहे नग्नो मुक्तशिरोरुह ।।
शून्यागारे श्मशाने वा कान्तारे भूधरेऽथवा ।
प्रत्यहं प्रजपेन्निर्भीर्ध्यायिन्देवीं क्षपाशनः ।।
एवं लक्षं जपन्मन्त्री नाशयेदचिरादरिम् ।
जुहृवता लवणोपेतां राजिकोनिशि तत्फलम् ।।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को उपवास करके शून्यघर में, वन में या पर्वतपर नग्न होकर, केश खोलकर, निर्भीकता पूर्वक, देवी का ध्यान करते हुए, प्रतिदिन जप करना चाहिए तथा केवल रात्रि में भोजन करना चाहिए (अर्थात् रात भर जागरण कर केवल रात्रि में ही जप करना चाहिए) । इस प्रकार एक लाख जप करने से मान्त्रिक शीघ्र ही शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है। (मुमक्षु के लिए शत्रुओं का तात्पर्य आन्तरिक शत्रुओं से है) ।

श्री धूमावती सम्बन्धी

१. **मुखशोधन मन्त्र** – ॐ धूँ ॐ ।
२. **मन्त्रों का कुल्लुका** – ॐ ह्रीं ।
३. **मन्त्रसेतु** – ब्राह्मण व क्षत्रिय के लिए 'ॐ', वैश्य के लिए 'फट्' और शुद्र के लिए 'ह्रीं' ।
४. **महासेतु** – 'स्त्रीं' ।

५. **निर्वाण** – सर्वप्रथम प्रणव फिर अकार से क्षकार पर्यन्त समस्त स्वर-वर्ण तथा अन्त में प्रणव लगाकर अर्थात् प्रणव एवं मातृका से सम्पुटित मूल मन्त्र का जप करना निर्वाण कहलाता है। इससे मन्त्र के आत्मस्वरूप का बोध हो जाता है तथा वह जागृत हो जाता है।

६. **प्राणयोग** – माया बीजेन पुटितं मूलमन्त्रं जपेत्सुधीः।
सप्तवारं जपात्पूर्वं प्राणयोगरुदीरितः॥

माया बीज से पुटित मूलमन्त्र का सातवार जप करना 'प्राणयोग' कहलाता है।

मन्त्रदोष निवृति के उपाय

मन्त्र के दस संस्कार :–

१. **जनन** – भोजपत्र पर लालचन्दन एवं गोरोचन से 'जननयन्त्र' लिखकर उसमें विधिवत मातृका देवी का आवाहन एवं पूजन कर एक अन्य भोजपत्र पर अपने मन्त्र के एक एक वर्ण का उद्धार करना चाहिए। तत्पश्चात् इन वर्णों का मार्जन कर पूरा मन्त्र लिख लेना चाहिए। इस प्रक्रिया को जनन संस्कार कहते हैं।

२. **दीपन** – हंस मन्त्र से सम्पुटित कर अपने मन्त्र का १००० वार जप करना दीपन संस्कार कहलाता है।
यथा :– हंसः अपना मन्त्र सोहं।

३. **बोधन** – हूँ अपना मन्त्र हूँ – पाँच हजार जप।

४. **ताड़न** – फट् अपना मन्त्र फट् – १००० जप।

५. **अभिषेक** – भोजपत्र पर अपना मन्त्र लिखकर 'ऐं हंसः ओं' मन्त्र से १००० वार जल को अभिमन्त्रित करके इसी मन्त्र से अपने मन्त्र का अभिषेक करना चाहिए।

६. **विमलीकरण** – 'ओं त्रों वषट् अपना मन्त्र वषट् त्रों ओं'। एक हजार जप।

७. **जीवन**–'स्वधा वषट् अपना मन्त्र स्वधा वषट्'–१००० बार जप।

८. **तर्पण** – दूध, घी, शहद या जल से मूलमन्त्र से १०० वार तर्पण करना ही तर्पण संस्कार है।

९. **गोपन** – 'ह्रीं अपना मन्त्र ह्रीं' – १००० वार जप।

१०. **आप्यायन**–'ह्सौः अपना मन्त्र ह्सौः' – १००० वार जप।

टिप्पणी :– इस प्रकार संस्कृत मन्त्र शीघ्र सिद्धि देता है।

अथ धूमावती प्रादुर्भावः (स्वतन्त्रतन्त्रे)

दक्ष प्रजापतेर्यज्ञे सर्वसंहारचञ्चला।
क्रुद्धा देहं विनिक्षिप्य ततो धूमोभवन्महान् ॥
तस्माद्धूमावती जाता सर्वशत्रु विनाशिनी।
कालीकाला कालवक्त्रा भौमवारे निशामुखे ॥
प्राप्तेऽक्षयतृतीयायां जाता धूमावतीशिवा ॥

तथा :–

एकस्मिन्नेव काले तु महासंहार चञ्चला।
दक्ष प्रजापतेर्यज्ञे सती देह समुद्भवात् ॥
धूमाद् धूमावती जाता मुखात् कालमुखी मता।
तद्धूमसम्भवा विद्या सर्वशत्रुविनाशिनी ॥
धूमावती तथा जाता भक्तानुग्रहकांक्षया।
प्राप्तेऽक्षयतृतीयायां भौमवारे निशामुखे ॥

॥ इतिप्रकारान्तरधूमावत्युत्पत्ति ॥

अथाङ्गभेदाः –

धूमावत्यङ्ग मन्त्राश्च वीरोशो वटुकः शिवे।
प्रत्यङ्गिरा च शरभस्तथा पाशुपतो मनुः ॥

संहारास्त्रं च शरभस्तथा पाशुपती मनुः ।
मारिणी त्वरिता विद्या कुल्लुका पञ्चकं शिवे ॥

टिप्पणी :- धूमावती सम्बन्धी शेष विषय के लिए प्रातः स्मरणीय श्री सद्गुरुनाथ श्री स्वामीजी महाराज विरचित 'महाविद्याचतुष्टयम्' द्रष्टव्य है ।

॥ इति श्रीधूमावत्यासपर्याऽर्णवः ॥

श्री पीताम्बरापीठ, दतिया (म. प्र.) से प्रकाशित

ग्रन्थ-सूची

क्र. नाम पुस्तक	लेखक/टीकाकार	माध्यम	मूल्य
१. श्री बगलामुखी रहस्यम्	राष्ट्रगुरु अनन्त श्री स्वामीजी महाराज पीताम्बरा-पीठ	संकृत	१८-००
२. पञ्चोपनिषद् (प्रकाश भाष्य)	,, ,, ,,	,,	४-५०
३. प्रश्नोपनिषद् (प्रकाश भाष्य)	" " "	"	१-००
४. प्रश्नोपनिषद् (प्रकाश भाष्य)	अनु. डॉ. योगेश मिश्र	अंग्रेजी	८-००
५. आनन्द लहरी शंकराचार्य	श्री रामकवि डिण्डिम भाष्य एवं गोपाल सुन्दरी टीका	संस्कृत	७-००
६. नारदीय शिक्षा नारदमुनि विरचित	भट्ट शोभाकर विरचित शिक्षा विवरणोपेता टीकासहित	"	१-५०
७. श्री महात्रिपुरसुन्दरी पूजा पद्धति	राष्ट्रगुरु पूज्यपाद श्री स्वामीजी महाराज	"	५-००
८. कामकला विलास	पुण्यानन्दनाथ	"	५-००
९. महाविद्याचतुष्टयम् (तारा-धूमावती, भुवनेश्वरी, मातङ्गी)	राष्ट्रगुरु अनन्त श्री स्वामीजी महाराज	"	८-००
१०. रेणुका-तंत्रम्	" " "	"	६-००
११. शरभ-तन्त्रम्	" " "	"	५-००
१२. श्रीविद्यारत्नसूत्रम् गौडपादाचार्य कृत	श्री शंकरारण्यमुनिकृत दीपिका सहितं	"	३-००
१३. पंचस्तवी	" " "	.	०-५०
१४. तान्त्रिक-पञ्चाङ्ग	राष्ट्रगुरु अनन्त श्री स्वामीजी महाराज	"	७-००
१५. घेरण्ड संहिता-घेरण्ड मुनि	,, ,, ,,	संस्कृत-हिन्दी	५-००
१६. प्रत्यभिज्ञाहृदयम् शाक्त दर्शन	" " "	हिन्दी	२-००
१७. ईश्वर-गीता कर्मपुराणान्तर्गत	. " "	हिन्दी	६-००
१८. वैदिक-उपदेश	" " "	हिन्दी	५-००
१९. वैदिक-उपदेश	अनु. श्री जी. एन. पिंगले	अंग्रेजी	१५-००

क्र. नाम पुस्तक	लेखक/टीकाकार	माध्यम	मूल्य
२०. अथर्ववेदांग ज्योतिष	अनु. पं. छोटेलाल शर्मा आचार्य पं. ओं.नारायण द्विवेदी	हिन्दी	१–००
२१. पुरश्चरण पद्धति	स्व. योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री	"	२–५०
२२. लेख–संग्रह	राष्ट्रगुरु अनन्त श्री स्वामीजी महाराज	"	१२–००
२३. वेदान्त प्रबोध सत्यबोधाश्रम प्रणीत	अनु. डा. शिवशरण शर्मा	संस्कृत-हिन्दी	२–००
२४. सिद्धान्त रहस्य	राष्ट्रगुरु अनन्त श्री स्वामीजी महाराज	हिन्दी	३–००
२५. सिद्धान्त रहस्य	अनु. श्री शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी	संस्कृत	५–००
२६. सिद्धान्त रहस्य	अनु. सी. डी. पाण्डे	अंग्रेजी	५–००
२७. सिद्धान्त रहस्य	अनु. डा. अयाचित	मराठी	५–००
२८. सौंदर्य लहरी पद्यानुवाद	अनु. स्व. फौजदार बलवीरसिंह	पद्य हिंदी	१–००
२९. पुरश्चरण	श्री सूर्यप्रकाश गोस्वामी	पद्य	१–००
३०. त्रिपुरा महिम्न स्तोत्रम्	स्व. योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री	संस्कृत-हिन्दी	३–००
३१. चिद्–विलास (श्री विद्या रहस्य)	राष्ट्रगुरु श्री स्वामीजी महाराज	"	१–५०
३२. चिद्–विलास	अनु. डा. योगेश मिश्र	अंग्रेजी सजिल्द	३–०० ७–००
३३. सप्तविंशति रहस्यम्	राष्ट्रगुरु श्री स्वामीजी महाराज	संस्कृत	७–००
३४. वातुलनाथ सूत्र अनन्तशक्तिपादकृत	पं. कृष्णानंद बुधौलिया	संस्कृत-हिन्दी	२–००
३५. शिवसूत्रं–भक्तिसूत्रञ्च	राष्ट्रगुरु श्री स्वामीजी महाराज ऋज्वर्थ बोधिनी कृति	संस्कृत	१–००
३६. शिवसूत्रं स्पंदकारिका	किशोरीलाल चउदा	संस्कृत-हिन्दी	१–५०
३७. मातृका चक्र विवेक	ले. सिद्धश्री स्वतन्त्रानन्द-नाथ भाष्य–शिवानन्द अनु. कृष्णानन्द बुधौलिया	संस्कृत-हिन्दी	१५–००
३८. स्वरोदय विज्ञान	संकलनकर्ता मास्टर मोतीलाल	हिन्दी	३–००
३९. योग विज्ञान प्रथम भाग	अज्ञात	"	१६–००
४०. योग विज्ञान द्वितीय भाग	अज्ञात	"	१०–००

क्र. नाम पुस्तक	लेखक /टीकाकार	माध्यम	मूल्य
४१. योग-दर्शन महर्षि पातञ्जलि प्रणीत	अनन्तपण्डितकृत कृति	संस्कृत	२-५०
४२. योग दर्शन महर्षि पातञ्जलि प्रणीत	अनु. डा. योगेश मिश्र	अंग्रेजी	४-००
४३. छिन्नमस्ता नित्यार्चन	" " "	"	६-००
४४. ताराकर्पूर राजस्तोत्र	. " .	हिन्दी-पद्य	१-५०
४५. केनोपनिषद्	" " "	हिन्दी	२-००
४६. ईशावास्योपनिषद्	" " "	.	३-५०
४७. माण्डूक्योपनिषद्	टीकाकार-पं. कृष्णानंद बुधौलिया	"	१-७५
४८. कठोपनिषद्	टीकाकार-बदनसिंह	"	५-५०
४९. मुण्डकोपनिषद्	" "	"	६-००
५०. पराप्रवेशिका महामाहेश्वराचार्य क्षेमराज विरचित	टीकाकार-पं. कृष्णानन्द बुधौलिया	हिन्दी पद्य अनुवाद एवं टीका	०-७५
५१. शाक्त सौरभ	ले. श्री बदनसिंह	हिन्दी	७-००
५२. शाक्त सौरभ (ज्ञान खण्ड)	" " "	"	१२-००
५३. ललिता सहस्रनाम	भास्कर राय विरचित सौभाग्यभास्कर अनु. कृष्णानन्द बुधौलिया	संस्कृत	३२-००
५४. भैरव-विज्ञान	पं. कृष्णानन्द बुधौलिया	हिन्दी	९-००
५५. प्रश्नोपनिषद्	हिन्दी अनुवाद अनुवादक-कृष्णानन्द बुधौलिया		५-००
५६. बह्वृचोपनिषद्	अप्पय दीक्षित कृत संस्कृत भाष्य एवं कृष्णानन्द बुधौलिया कृत हिन्दी टीका	संस्कृत-हिन्दी	१-००
५७. तीर्थंभारतम्	डॉ. श्री. भा. वर्णेकर	संस्कृत	२०-००
५८. भगवान बटुक भैरव	संकलनकर्ता राधारमण दूबरि	संस्कृत	२१-००
५९. निगमागम समन्वय	डॉ. स. मो. अयाचित	हिन्दी	३०-००
६०. दार्शनिक चिन्तन और शाक्त सिद्धान्त	स्व. कृष्णानन्द बुधौलिया	"	२०-००

आवश्यकतानुसार मूल्य में परिवर्तन हो सकता है।

श्री पीताम्बरा पीठ

ह्लीं

दतिया (म.प्र.)

प्रकाशक :

श्रीपीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्, दतिया (म. प्र.)

SVB
S.NO
Subj
Sub